04 - पड़ौसी देशों में राजनीतिक हलचल?

05 - मुख्यमंत्री और राज्यपाल के संवैधानिक अधिकार

A Daily News Magazine

भोपाल

सोमवार, 11 मई, 2026

06 - छोटे कार्यकर्ताओं का सम्मान ही भाजपा की असली ताकतः हेमंत...

07 - वन स्टॉप सेंटर की संवेदनशील पहल से 85 वर्षीय महिला...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 248, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

शुभेंदु सरकार के सामने होंगी ये बड़ी चुनौतियां

चंदन कुमार जजवाड़े

पश्चिम बंगाल में शुभेंदु अधिकारी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है. इसके साथ ही राज्य में पहली बार बीजेपी की सरकार बन गई है।

अन्य राज्यों के मुक़ाबले पश्चिम बंगाल में एक ख़ास बात यह रही है कि यहाँ जिस पार्टी या गठबंधन की सरकार रही है, उसने लंबे समय तक शासन किया है। बीजेपी को अब राज्य में अपने पुराने वादों को पूरा करने के लिए काम करना होगा। राज्य के लिए बीजेपी के वादों की फ़ेहरिस्त काफ़ी लंबी है। नए मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के लिए ये वादे कितनी बड़ी चुनौती बन सकते हैं।

पश्चिम बंगाल में हुए विधानसभा चुनावों में बीजेपी को दो-तिहाई से ज़्यादा बहुमत मिला है। इस विशाल बहुमत और जनता की उम्मीदों का दबाव उस पर बना रहेगा। बीजेपी को आमतौर पर हिंदी भाषी इलाक़े की पार्टी के तौर पर जाना जाता है, ऐसे में उसे बांग्ला संस्कृति के साथ तालमेल बैठाकर अपने चुनावी वादों को पूरा करना होगा। वरिष्ठ पत्रकार महुआ चटर्जी कहती हैं, 'बीजेपी के साथ हिन्दी पट्टी की पहचान जुड़ी है, जिसे बांग्ला पहचान के साथ तालमेल बैठाना होगा।' शुभेंदु अधिकारी ने जिस दिन शपथ ली वह गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती का दिन है। लेकिन ऐसा पहली बार हुआ कि रवींद्र जयंती के दिन पश्चिम बंगाल सरकार का सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं हुआ।गवर्नर के नेतृत्व में यह काम हो सकता था।''

वरिष्ठ पत्रकार समीर के पुरकायस्थ कहते हैं, 'रवींद्रनाथ टैगोर से बड़ी बांग्ला संस्कृति की कोई पहचान नहीं है, वो बंगाल के लिए एक फ़िलोस्फ़ी हैं। बीजेपी को अपने सिंबोलिज़्म को वास्तविकता में बदलना होगा। बीजेपी की पहचान राम मंदिर आंदोलन से जुड़ी हुई है। महुआ चटर्जी कहती हैं, 'जब शपथ ग्रहण कार्यक्रम चल रहा था तो नीचे जो लोग मौजूद थे, वो धार्मिक नारे लगा रहे थे, यह बंगाली नारा नहीं है। इस भावना को दिल्ली में बैठकर नहीं समझा जा सकता है।'

बीजेपी ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के दौरान भ्रष्टाचार और अपराध को बड़ा मुद्दा बनाया। राज्य के मुख्यमंत्री बन चुके शुभेंदु अधिकारी अक्सर टीएमसी के नेताओं पर संगठित अपराध में शामिल होने का आरोप लगाते रहे हैं। पश्चिम बंगाल में नौकरियों में भ्रष्टाचार का मुद्दा भी बीजेपी ने उठाया था। राज्य में साल 2016 में स्कूल सेवा आयोग की ओर से आयोजित भर्ती परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली और घोटाले के आरोप लगे थे। क़रीब एक साल पहले ही सुप्रीम कोर्ट ने क़रीब 25 शिक्षकों की भर्ती रद्द कर दी थी. ऐसे में अब बीजेपी की सरकार आने के बाद एक स्वच्छ सरकार देना उनके लिए बड़ी चुनौती होगी। हालांकि ख़ुद शुभेंदु अधिकारी पर भ्रष्टाचार के आरोप भी लगते रहे हैं। वो 'नारदा स्टिंग वीडियो' में काम कराने के एवज़ में कथित तौर पर पैसे लेते देखे गए थे। इसके अलावा सारदा चिटफ़ंड घोटाले में भी उनका नाम सामने आया था।

दरअसल साल 1998 से साल 2020 तक शुभेंदु अधिकारी ममता बनर्जी की टीएमसी में थे। उस समय बीजेपी ने इस स्टिंग वीडियो का इस्तेमाल टीएमसी को घेरने के लिए किया था। इसी के साथ ही राज्य में युवाओं के लिए नौकरी और रोज़गार के नए अवसर पैदा करने का दबाव भी सरकार पर होगा। पश्चिम बंगाल में बीजेपी ने महिला सुरक्षा को चुनावों में बहुत बड़ा मुद्दा बनाया था। ख़ासकर साल 2024 में कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर के साथ हुई घटना के मुद्दे को शांत करने के लिए ख़ुद ममता बनर्जी को सड़कों पर उतरना पड़ा था। ममता बनर्जी ने कथित तौर पर यह भी कहा था कि महिलाओं को रात आठ बजे के बाद घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए, उनके इस बयान को बीजेपी के नेताओं ने काफ़ी तूल दिया और इससे महिलाओं को अपने पक्ष में लाने की कोशिश की। लेकिन इन सबके बावजूद भी ममता बनर्जी की बंगाल की जनता के बीच ज़मीनी पकड़ बहुत कमज़ोर कभी नहीं हुई।

चुनावों में ममता की पार्टी तृणमूल कांग्रेस को भले ही 80 सीटें मिली हों लेकिन उनके साथ अब भी 40% से ज़्यादा वोटबैंक बना हुआ है। इसके पीछे राज्य में चल रही जनकल्याण की योजनाओं का बड़ा योगदान माना जाता है। समीर के पुरकायस्थ कहते हैं। अगर बीजेपी जनहित की योजनाओं को आगे बढ़ाने में नाकाम होती है तो वोटरों की निष्ठा बदलने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा। '

पश्चिम बंगाल में बीजेपी के चुनाव अभियान की बात करें तो उसने महिला सुरक्षा, भ्रष्टाचार, रोज़गार और जनकल्याण की योजनाओं पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया। ऐसे में उसके सामने पश्चिम बंगाल जैसे राज्य, जहां आर्थिक तौर पर बड़ी संख्या में पिछड़ी आबादी रहती है, उसे हर किसी को साथ लेकर चलना होगा।

पश्चिम बंगाल में बीजेपी और ख़ासकर गृह मंत्री अमित शाह कई बार 'घुसपैठ' का मुद्दा उठा चुके हैं। यह मूल रूप से बांग्लादेश से बिना दस्तावेज़ के भारत आने वाले लोगों से जुड़ा मामला है। अमित शाह इस कथित घुसपैठ को न रोक पाने के पीछे राज्य की ममता सरकार को दोषी ठहराते थे। महुआ चटर्जी कहती हैं, 'इस मामले में एक ख़ास बात यह भी है कि जो लोग सन 1946-47 से अब तक बांग्लादेश छोड़कर पश्चिम बंगाल आए हैं, उनमें ज़्यादातर हिंदू हैं। फिर हमें एक बात और ध्यान में रखनी होगी कि बांग्लादेशी घुसपैठिए के नाम पर भारत में जो कुछ भी होगा उसकी प्रतिक्रिया पड़ोस के बांग्लादेश में देखने को मिल सकती है। '

साल 2011 के बाद पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के नेतृत्व में टीएमसी का शासन रहा था। इससे पहले 1977 से 2000 तक ज्योति बसु और उनके बाद बुद्धदेव भट्टाचार्य साल 2011 तक पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा सरकार के मुख्यमंत्री रहे। इस दौरान राज्य में कभी बड़ा सांप्रदायिक तनाव देखने को नहीं मिला है। साल 2011 की जनगणना के मुताबिक़ राज्य में 27% मुस्लिम आबादी है. ऐसे में इस विशाल आबादी को साथ लेकर चलना बीजेपी के लिए बड़ी चुनौती होगी। ख़ासकर पिछले कुछ दिनों में हुई घटनाओं को देखते हुए यह आसान नहीं होगा।

वरिष्ठ पत्रकार समीर के पुरकायस्थ कहते हैं, 'बीजेपी ने 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा दिया है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर उसे इसके लिए अपने समर्थकों में नई सोच डालनी होगी। पश्चिम बंगाल में चुनावी हिंसा दुर्भाग्य से राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा बन गई है। चुनाव के बाद जो भी हिंसा हुई है, उसमें कम पैमाने पर ही सही लेकिन अल्पसंख्यक समुदाय निशाने पर रहा है। '

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

चुप रहने से उस बेगैरत के
अहम की तुष्टि होती है

उचित जवाब न दे पाना
मुझे विचलित करता है

बोलना बहुत बार
मेरी हार का कारण बना

मुँह में छुरी रखने से
बेहतर है
छुरी सामने रखना

चुप्पी, जिस्म का चैन है
मौन मन का विक्षोभ

चुप नहीं मौन हूँ
और
एक शहंशाह लगातार
मेरी बेचैनी में शामिल है।।

– शैलेन्द्र शरण

एमपी में 2117 किमी बनेंगी नई ग्रामीण सड़कें

गांवों की जीवन धारा बनी प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विकास की प्रबल इच्छा-शक्ति हो, तो एक योजना ही पूरे देश के ग्रामीण इलाकों की तकदीर बदल सकती है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने यह संभव कर दिखाया है। इस योजना से बनीं सड़कें गांवों की जीवन धारा बन चुकी हैं। ग्रामीण भारत की तकदीर और तस्वीर बदलने में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का योगदान अतुलनीय है। देश-प्रदेश के छोटे-बड़े कस्बों, गांव-देहात, टोले-मजरों की अंतिम सीमा तक पक्की सड़कों की पहुंच हो गई है। अब ग्रामीण क्षेत्रों तक आवागमन बेहद आसान हो गया है।मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भैरूंदा (सीहोर) में पीएमजीएसबाय-आईवी प्रोजेक्ट का मध्यप्रदेश में रिमोट से शुभारंभ किया। शुभारंभ समारोह में उत्कृष्टता प्रमाण पत्र वितरित किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्राम विकास कार्यक्रमों और लोक कल्याणकारी योजनाओं को धरातल में उतारकर समावेशी विकास की लक्ष्य पूर्ति में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से नई रफ्तार मिली है। ग्राम्य भारत का पूरा परिदृश्य ही बदल देने वाली प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के 25 साल पूरे होने पर आज मध्यप्रदेश इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बन रहा है। इस योजना का रजत जयंती समारोह वास्तव में ग्रामीण विकास के एक नए युग का उद्घोष है। पीएमजीएसवाय-फोर और पीएम जन-मन का राष्ट्रव्यापी शुभारंभ देश के गांवों को मजबूत, टिकाऊ और सर्वकालिक सड़क सम्पर्क से जोड़ने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को सीहोर जिले के भैरुंदा में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना फेज-4 एवं प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाभियान (पीएम जन-मन) के कार्यों के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

एमपी को पांच हजार करोड़ रुपए की सौगातें मिली

सीएम मोहन यादव ने कहा कि एमपी में अद्भुत समय चल रहा है। आज केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह के हाथों 5 हजार करोड़ की सौगातें मिली हैं। प्रधानमंत्री सड़क, प्रधानमंत्री आवास, देश के राज्यों के लिए अलग-अलग पुरस्कार प्रदान किए गए। इन पुरस्कारों में मध्यप्रदेश को पहले के दो पुरस्कार और बाद के तीन पुरस्कार मिले हैं। मैं आज केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि हम और आप सदैव साथ रहेंगे। मैं वो सभी मांगें मानने की घोषणा करता हूं, जो भी केंद्रीय शिवराज सिंह चौहान अपनी लोकसभा के लिए चाहते हैं।

तमिलनाडु के

'थलापति' बने विजय

शपथ लेते वक्त देने लगे स्पीच तो राज्यपाल ने टोका

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलगा वेत्री कड़गम (टीवीके) चीफ और एक्टर से नेता बने सी जोसेफ विजय तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री बन गए हैं। उन्होंने रविवार सुबह 10.15 बजे तमिल में शपथ ली। इस दौरान राहुल गांधी भी मौजूद रहे। थलापति विजय शपथ लेते समय निर्धारित लाइनों के अलावा और बातें बोलने लगे। इस पर राज्यपाल अर्लेकर ने उन्हें टोक दिया और कहा कि वही पढ़ें जो लिखकर दिया है। सीएम विजय के साथ 9 और मंत्रियों ने भी शपथ ली। इनमें एन आनंद, आधव अर्जुन, डॉ. केजी अरुणराज, केए सेंगोट्टैयन, पी वेंकटरमणन, आर निर्मल कुमार, राजमोहन, डॉ. टीके प्रभु, सेल्वी एस कीर्तना शामिल है। ये सभी विजय की पार्टी टीवीके के विधायक हैं। सहयोगी दलों के किसी विधायक को मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किया गया है।

मैं किसी राजकुमार के परिवार से नहीं आया हूं

इसके साथ ही सीएम विजय ने कहा कि मैं आपलोगों के बीच से निकला हुआ व्यक्ति हूं। मैं किसी राजकुमार के परिवार से नहीं आया हूं। मैं आपलोगों के बीच से आपके परिवार के सदस्य और भाई की तरह आया हूं। आप सभी ने मुझे सिनेमा में प्यार से अपनाया और एक बड़ा मुकाम दिया है।

सीएम विजय ने पहले ही भाषण में इरादे किए साफ

शपथ लेने के बाद मुख्यमंत्री विजय ने तमिलनाडु के लोगों को संबोधित किया है। उन्होंने कहा कि यह एक नई शुरुआत है। हमने धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक न्याय आधारित शासन का वादा किया है। साथ ही कहा कि सरकार में उनके अलावा कोई दूसरा पावर सेंटर नहीं होगा। सीएम विजय ने कहा कि हमारी राजनीतिक यात्रा में समर्थन के लिए आप लोगों का आभार व्यक्त करता हूं। आप सभी ने मुझसे यह कहकर राजनीति में आने को कहा था कि हम आपके साथ हैं। आज आपने मुझे तमिलनाडु का मुख्यमंत्री बना दिया है।

हिमंता के हाथ में ही होगी असम की सत्ता

● चुने गए बीजेपी विधायक दल के नेता, बंपर जीत मिली है

दिसपुर (एजेंसी)। असम के अगले मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा होंगे। उन्हें भाजपा विधायक दल का नेता चुन लिया गया है। रविवार सुबह भाजपा विधायक दल की बैठक कोई जिसमें हिमंता को नेता चुना गया। केंद्रीय पर्यवेक्षक के तौर पर केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा और सह पर्यवेक्षक के तौर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी मौजूद थे। विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद हिमंता ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मैं आदरणीय मोदी जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने मुझ पर भरोसा जताते हुए मुझे लगातार दूसरी बार असम की जनता के मुख्य सेवक के रूप में सेवा करने का अवसर दिया। नितिन नवीन और आदरणीय अमित शाह जी को उनके निरंतर मार्गदर्शन और दिशा-दर्शन के लिए हार्दिक धन्यवाद। मैं एनडीए परिवार के सभी निर्वाचित विधायकों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मुझे एनडीए विधानसभा पार्टी का नेता चुना और मुझे विकसित और सुरक्षित असम के जनादेश को पूरा करने का दायित्व सौंपा। मां कामाख्या के आशीर्वाद और असम की जनता के समर्थन से, मैं उस यात्रा को जारी रखने के लिए तत्पर हूं जिसे हमारी पार्टी ने 2016 में शुरू किया था, ताकि मैं ऐ असमी की सेवा में चौबीसों घंटे तत्पर रह सकूं।

पीएम मोदी की सुरक्षा में सेंध की कोशिश! मचा हड़कंप

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी के बेंगलुरु दौरे से पहले रविवार को सुरक्षा एजेंसियों में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब उनके संभावित रूट के पास विस्फोटक सामग्री मिली। पुलिस को कग्गलीपुरा इलाके के थाथागुनी क्षेत्र में, आर्ट ऑफ लिविंग कार्यक्रम स्थल की ओर जाने वाले मार्ग के निकट कुछ जिलेटिन स्टिक बरामद हुईं। रिपोर्ट के मुताबिक, सुबह एक व्यक्ति ने स्थानीय पुलिस स्टेशन में फोन कर दावा किया कि एचएएल क्षेत्र और आर्ट ऑफ लिविंग सेंटर के आसपास विस्फोट हो सकते हैं। सूचना मिलते ही पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड में आ गईं और दोनों स्थानों पर सघन तलाशी अभियान शुरू किया गया। जांच के दौरान एयरपोर्ट इलाके में कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, लेकिन आर्ट ऑफ लिविंग केंद्र के पास प्रधानमंत्री के रूट पर एक पुल के किनारे, कंपाउंड वॉल के पास जिलेटिन स्टिक बरामद की गईं। इसके बाद पुलिस ने कॉल करने वाले संदिग्ध को कोरमंगला के पास स्थित एक घर से हिरासत में ले लिया। फिलहाल आरोपी से पूछताछ जारी है और सुरक्षा एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि बरामद विस्फोटक किसी बड़ी साजिश का हिस्सा थे या नहीं। पीएम मोदी के दौरे को देखते हुए पूरे इलाके में सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी गई। पुलिस को शुरुआती जांच में पता चला है कि संदिग्ध पहले भी वीआईपी दौरों के दौरान इसी तरह की धमकी भरी कॉल कर चुका है और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते उसे पहले भी हिरासत में लिया गया था। हालांकि इस बार विस्फोटक बरामद होने के कारण मामले को गंभीरता से लिया जा रहा है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि क्या यह किसी बड़े नेटवर्क या आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़ी किसी रंजिश का हिस्सा है।

बेंगलुरु दौरे से पहले काफिले के रूट पर मिला विस्फोटक

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 11 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

आईएसआई से जुड़े एमपी के 3 युवक गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस का खुलासा- मंदिर, ढाबा और मिलिट्री कैंप उड़ाने वाले थे पाकिस्तान भेजी तस्वीरें

भोपाल (नप्र)। दिल्ली पुलिस ने पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई से जुड़े होने का दावा करते हुए एमपी के तीन युवकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस का कहना है कि ये लोग दिल्ली का ऐतिहासिक मंदिर, दिल्ली-सोनीपत हाईवे स्थित एक ढाबा और हरियाणा का सैन्य कैंप उड़ाने वाले थे।

इनकी पहचान टीकमगढ़, नेगुवां (पृथ्वीपुर थाना) निवासी अनमोल राय (24), ग्वालियर, डबरा निवासी राजवीर (21) और विवेक बंजारा (19) के रूप में की गई है। तीनों को दिल्ली पुलिस ने उनके गांव से गिरफ्तार किया और अपने साथ ले गई।

आरोपियों के फोन से कई संदिग्ध ई-मेल मिले- एसीपी स्पेशल सेल दिल्ली पीएस कुशवाहा के मुताबिक, तीनों ही आरोपी गरीब परिवारों से ताल्लुक रखते हैं। तीनों के मोबाइल के ऑडियो, वीडियो कॉल से संदिग्ध नंबरों पर बात किए जाने, सोशल मीडिया से खास स्थानों के तस्वीरें पाकिस्तान भेजे जाने की पुष्टि हुई है।

आरोपियों के मोबाइल से कई संदिग्ध ई-मेल भी मिले हैं। पुलिस यह पता लगा रही है कि आरोपियों को आतंकी साजिश में जोड़ने के एवज में क्या मिला था। तीनों की गिरफ्तारी शुक्रवार को हुई। तीनों दिल्ली में मजदूरी कर चुके हैं।

गैंग बस्ट ऑपरेशन 2.0 में खुलासा

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने 'गैंग बस्ट ऑपरेशन 2.0' के तहत विभिन्न राज्यों से शाहजाद भट्टी मॉड्यूल से जुड़े 9 संदिग्ध ऑपरेटिव्स को गिरफ्तार किया था। इनसे पूछताछ में जांच एजेंसियों को पता चला कि आरोपियों में से एक ने दिल्ली के एक ऐतिहासिक मंदिर की रेकी की थी। परिसर की तस्वीरें सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तान स्थित हैंडलर्स को भेजी थीं। मॉड्यूल की योजना मंदिर में तैनात पुलिस और अर्धसैनिक बलों को निशाना बनाने तथा फायरिंग कर दहशत फैलाने की थी।

केरल में नहीं सुलझ पा रहा सीएम का मुद्दा

- आपसी कलह से जूझ रही कांग्रेस, थरूर-खरगे की बैठक
- सीएम को लेकर 3 नेताओं में है जंग चरम पर पहुंची गुटबाजी

तिरुअनंतपुरम (एजेंसी)। केरल में एलडीएफ के 10 साल के शासन को खत्म करने के बाद कांग्रेस के भीतर जश्न के बजाय गुटबाजी का दौर शुरू हो गया है। मुख्यमंत्री पद के लिए तीन मुख्य दावेदार वीडी सतीसन, रमेश चेन्निथला और केसी वेणुगोपाल मैदान में हैं। शनिवार को ये सभी नेता दिल्ली में मौजूद रहे और माना जा रहा है कि अगले 24 घंटों के भीतर अंतिम नाम की घोषणा हो जाएगी। मुख्यमंत्री पद की यह जंग अब सार्वजनिक हो गई है। तिरुवनंतपुरम से लेकर इडुक्की तक समर्थकों ने अपने-अपने नेताओं के पोस्टर और होर्डिंग्स लगा दिए हैं। सबसे विवादित घटना तब हुई जब दिवंगत नेता ओमान चांडी और केसी वेणुगोपाल की तस्वीर वाले एक फ्लेक्स बोर्ड को फाड़ दिया गया और उस पर काला तेल डाल दिया गया। कांग्रेस सांसद राजमोहन उन्नीथन और पीजे कुरियन ने इस व्यवहार की कड़ी निंदा की है। उन्होंने स्पष्ट किया कि दबाव की राजनीति से मुख्यमंत्री तय नहीं किया जा सकता।

मुख्यमंत्री पद के मुख्य दावेदार

वीडी सतीसन को विपक्ष के नेता के रूप में एलडीएफ के खिलाफ आक्रामक चेहरा माना गया। यूडीएफ का समर्थन उन्हें प्राप्त है। पूर्व विपक्ष के नेता और संगठन पर मजबूत पकड़। सोनिया गांधी के करीबी माने जाते हैं। 2021 की हार उनके नेतृत्व में हुई थी। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के बेहद भरोसेमंद हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव हैं।

● एनसीआरबी ने जारी किए डराने वाले आंकड़े, भय का माहौल

अचानक जान गंवा रहे भारतीय युवा, हर घंटे 120 की जा रही जान

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में भारतीय युवाओं को लेकर एक चिंताजनक बात साझा की है। डाटा के मुताबिक, भारत में काम काजी युवाओं की अचानक होती मृत्यु में लगातार तेजी देखी जा रही है। 30 से 60 वर्ष की आयु वर्ग के पुरुषों के बीच में ऐसी स्थिति ज्यादा बढ़ रही है। पिछले दशक से तुलना करें, तो 2017 में 23,396 युवा अचानक मौत के मुंह में समा गए थे, जबकि 2024 में यह आंकड़ा 42,688 रहा। एनसीआरबी ने अपने डाटा में अचानक मौतों में उन स्थितियों को शामिल किया है, जिसमें हिंसा को

छोड़कर बाकी अन्य में तुरंत ही या कुछ ही मिनटों में मौत हो जाती है। इसमें हार्ट अटैक, सड़क दुर्घटना और अन्य स्थितियां शामिल हैं।

सड़क हादसों में अभी भी जान गंवा रहे भारतीय

एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक हार्ट अटैक के अलावा सड़क दुर्घटना आज भी युवा भारतीयों की जान लेने के मामले में सबसे आगे है। 2017 में भारत में हुई सभी अचानक मौतों में 45.1 फीसदी सड़क दुर्घटना की वजह से हुई थीं। वहीं 2024 में भी यह अचानक हुई मौतों में 43 फीसदी हिस्सा रोड़ एक्सीडेंट्स का ही है। सड़क परिवहन मंत्रालय लगातार इसको लेकर गाइडलाइंस जारी करता रहा है, लेकिन इसके बाद भी सड़कों पर होने वाली मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ा है।

पाकिस्तान के कई शहरों तक होगी अग्नि-5 की पहुंच

परमाणु हमला करने में भी सक्षम, बढ़ाई सेना की ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने रक्षा के क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक मील का पत्थर पार कर लिया है। रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को घोषणा की कि भारत ने स्वदेशी रूप से विकसित अग्नि-5 मिसाइल का सफल परीक्षण किया है, जो एमआईटीआरवी तकनीक से लैस है। यह परीक्षण शुक्रवार को ओडिशा के डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से किया गया। मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टार्गेटेबल री-एंट्री व्हीकल तकनीक का सबसे बड़ा लाभ यह है कि एक ही मिसाइल के जरिए कई परमाणु हथियारों को ले जाया जा सकता है। ये हथियार सैकड़ों किलोमीटर के दायरे में फैले दुश्मन के अलग-अलग लक्ष्यों को निशाना बना सकते हैं।

मिशन दिव्यास्त्र, पहला परीक्षण 2024 में किया था

भारत ने इस तकनीक का पहला सफल परीक्षण मार्च 2024 में किया था, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मिशन दिव्यास्त्र का नाम दिया था। इस परीक्षण के साथ ही भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों के क्लब में शामिल हो गया है।

अब दक्षिण के राज्यों पर बीजेपी की है नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। अरब सागर के तट से वर्ष 1980 में शुरू हुई भाजपा की राजनीतिक यात्रा 46 साल बाद गंगासागर तक पहुंच गई है। हालांकि, हिंद महासागर की सीमाई राज्यों तक पहुंचना अभी बाकी है। पार्टी का अगले एक दशक का लक्ष्य सारी समुद्री सीमाओं वाले प्रदेशों में भाजपा को सत्ता तक पहुंचाना है। इसके लिए अब पार्टी अपने मिशन दक्षिण के लिए बदली हुई रणनीति पर काम करेगी। भाजपा की पहुंच से दूर रहा तेलंगाना उसका पहला लक्ष्य है। उसके बाद केरल और तमिलनाडु की व्यूह रचना पर काम होगा। कर्नाटक में उसे अगले ही चुनाव में वापसी की उम्मीद है। साल 2014 में नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के कुछ समय बाद ही अमित शाह ने भाजपा की कमान संभाली थी। उन्होंने अपने पहले ही भाषण में भाजपा के पूर्वोत्तर विस्तार और कोरोमंडल में पहुंच का विशाल रोड मैप पेश किया था। पूर्वोत्तर से कांग्रेस को सत्ता से बाहर करने और प्रमुख पूर्वी राज्यों बिहार, ओडिशा एवं पश्चिम बंगाल में अपने मुख्यमंत्री बनाने के बाद अब वह अधूरे मिशन दक्षिण की ओर बढ़ने जा रही है।

तमिलनाडु में अपनाएगी बंगाल वाला फॉर्मूला

वाम दलों की जगह लेने की तैयारी

केरल भाजपा से ज्यादा आरएसएस की मजबूती के लिए जाना जाता है। इस बार के चुनाव में भाजपा ने बदलाव वाले चुनाव में अपने लिए तीन सीट जीतकर तथा पांच सीट पर दूसरे स्थान पर रहकर अपने भावी अभियान की शुरुआत कर दी है। सूत्रों के अनुसार, भाजपा वाम दलों की हार के बाद अब उसका स्थान खुद हासिल करने की तैयारी में है। राज्य में हिंदू समुदाय की सालों से पसंद रहे वाम दलों की जगह अब भाजपा लेने की तैयारी में है। ईसाई समुदाय में भी भाजपा ने अपनी पकड़ बनाई है।

तमिलनाडु में तैयार भाजपा की जमीन

दक्षिण के पांच राज्यों में भाजपा अभी आंध्र प्रदेश में तेलुगुदेशम के साथ गठबंधन सरकार में है। कर्नाटक में कई बार सरकार बना चुकी पार्टी को अगले चुनाव में फिर से सत्ता में आने का भरोसा है। बाकी तीन राज्यों तेलंगाना, तमिलनाडु एवं केरल उसके अगले लक्ष्य हैं। तेलंगाना में भाजपा की जमीन तैयार हो चुकी है। केरल और तमिलनाडु ही उसके लिए सबसे मुश्किल राज्यों में शामिल हैं। सूत्रों के अनुसार, भाजपा तमिलनाडु में पश्चिम बंगाल का फॉर्मूला अपनाएगी और अपनी पार्टी को मजबूत करने के लिए अन्नाद्रमुक के कई प्रमुख नेताओं को अपने साथ लाएगी। यहां हाल में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बने नागेंद्रन भी अन्नाद्रमुक से ही आए हैं।

प्रदेश में सभी तरह के उद्योगों की स्थापना पर जोर, युवाओं के लिए रोजगार प्राथमिकता: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दी है विकास को रफ्तार: प्रणव अदाणी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में सभी तरह के उद्योगों की स्थापना पर जोर दिया जा रहा है। मध्यप्रदेश सरकार युवाओं के लिए रोजगार को प्राथमिकता देते हुए किसानों, महिलाओं और गरीबों के साथ सभी वर्गों के कल्याण के लिए सक्रिय है। पर्यटन और पशुपालन के क्षेत्र में प्रदेश महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त करेगा। गुना क्षेत्र में सीमेंट निर्माण इकाई से डेढ़ हजार लोगों को रोजगार प्राप्त होगा। अडाणी समूह की ओर से 32 हैक्टेयर भूमि पर इस इकाई की स्थापना के फलस्वरूप 4 मिलीयन टन सीमेंट उत्पादन होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को गुना जिले में अंम्बुजा सीमेंट फैक्ट्री के शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने औद्योगिक विकास, अधोसंरचनात्मक सुदृढ़ीकरण और रोजगार सृजन को नई गति देने के उद्देश्य से विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-

पूजन और लोकार्पण भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इन विकास कार्यों से गुना जिले में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार होगा तथा आमजन को बेहतर सेवाओं का लाभ मिलेगा। प्रदेश का ग्वालियर और चंबल अंचल कभी डकैतों की गोलियों से गूंजता था, अब यहां विकास का परचम लहरा रहा है। अब यहां दस्युओं के स्थान पर प्रगति पहचान का माध्यम बनी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश बदल रहा है।

कांग्रेस धोखेबाज, डीएमके की पीठ में घोंपा छुरा

कर्नाटक में 'आर्ट ऑफ लिविंग' के प्रोग्राम में बोले मोदी

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- कांग्रेस और डीएमके के बीच पिछले 25-30 साल से करीबी संबंध रहे हैं। डीएमके ने कई बार कांग्रेस को संकट से बाहर निकाला। 2014 से पहले केंद्र में 10 साल तक चली कांग्रेस सरकार भी डीएमके के समर्थन की वजह से ही टिकी रही। डीएमके ने हर समय

कांग्रेस के हित में काम किया, लेकिन जैसे ही सत्ता का समीकरण बदला, कांग्रेस ने पहले ही मौके पर डीएमके की पीठ में छुरा घोंप दिया। उन्होंने यह बात आर्ट ऑफ लिविंग के 45वें स्थापना दिवस समारोह में कही। पीएम रविवार से तीन राज्यों के दौरे पर हैं। पीएम ने कहा- कांग्रेस पार्टी सिर्फ धोखा देना जानती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस खुद झूठ बोलती है और उसकी गारंटियां भी झूठी होती हैं। कर्नाटक में तीन साल से यही स्थिति है।

बेंगलुरु में पीएम के कार्यक्रम स्थल से 3 किमी दूर मिलीं जिलेटिन छड़ें

कर्नाटक के बेंगलुरु में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे से पहले सुरक्षा जांच के दौरान दो जिलेटिन छड़ें बरामद हुई हैं। अधिकारियों के मुताबिक, ये मुख्य कार्यक्रम स्थल से करीब तीन किलोमीटर दूर फुटपाथ के किनारे मिलीं। एसपी सेंट्रल रेंज बेंगलुरु ने बताया कि शुक्रवार सुबह पीएम मोदी के पहुंचने से पहले इलाके में चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान दो जिलेटिन छड़ें बरामद की गईं। फिलहाल मामले की जांच जारी है और सुरक्षा एजेंसियां यह पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि छड़ें कैसे पहुंचीं।

400 से ज्यादा सीटें जीतने वाली पार्टी 100 सीटें भी नहीं जीत पा रही

पीएम ने कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि 40 साल पहले 400 से ज्यादा सीटें जीतने वाली पार्टी पिछले तीन चुनावों में मिलकर भी 100 सीटों का आंकड़ा पार नहीं कर पाई। इसके बावजूद कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों का अहंकार इतना ज्यादा है कि वे अपनी हार के लिए पूरी दुनिया को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। पीएम ने बीजेपी और एनडीए की जीत का जिक्र करते हुए कहा कि देशभर में पार्टी को बड़ा समर्थन मिला है। उन्होंने कहा कि पुडुचेरी में लगातार दूसरी बार और असम में लगातार तीसरी बार एनडीए सरकार बनी है। पश्चिम बंगाल में भी बीजेपी को पहली बार इतना बड़ा जनादेश मिला है। उन्होंने इसे पार्टी के लिए अहम राजनीतिक उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा यह भी कहा कि दो हफ्ते पहले गुजरात में हुए पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में बीजेपी ने रिकॉर्ड जीत हासिल की। उनके मुताबिक, गुजरात बीजेपी ने अपने सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए।

बीजेपी को रोकने के लिए वाम के साथ भी जाने को तैयार

बंगाल की करारी हार से बदले ममता के तेवर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में कभी वामपंथ की सबसे बड़ी विरोधी मानी जाने वाली मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सुर अब विधानसभा चुनाव में मिली करारी शिकस्त के बाद बदलते नजर आ रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ने भाजपा को रोकने के इराने से विपक्षी दलों से साथ आने की अपील की है। ममता ने संकेत दिए हैं कि भाजपा के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए उन्हें वामदलों और यहां तक कि धुर-वामपंथियों से भी परहेज नहीं है। उनका यह बयान न केवल बंगाल बल्कि देश की राजनीति में एक बड़ी हलचल पैदा कर रहा है। जिस ममता बनर्जी ने तीन दशक पुराने वामपंथी किले को ढहाया था, आज वही उनके साथ मंच साझा करने की बात कह रही हैं। ममता बनर्जी की राजनीति की नींव ही वामपंथ के विरोध पर टिकी थी। 1970 और 80 के दशक में जब पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा अभेद्य माना जाता था, तब ममता बनर्जी एक आक्रामक युवा नेता के रूप में उभरीं।

सिंगूर और नंदीग्राम आंदोलन से बनाई पहचान

साल 2006-2008 के दौरान सिंगूर में टाटा नैनो प्लांट के खिलाफ भूमि अधिग्रहण आंदोलन और नंदीग्राम में पुलिस फायरिंग की घटनाओं ने ममता बनर्जी को बंगाल की जनमानस का मसीहा बना दिया। उन्होंने 'मां, माटी, मानुष' का नारा दिया, जिसने वामपंथ के उस सर्वहारा वर्ग को अपनी ओर खींच लिया जो कभी माकपा का आधार था। साल 2011 के विधानसभा चुनावों में ममता बनर्जी ने वह कर दिखाया जो असंभव माना जाता था। उन्होंने 34 साल पुराने वामपंथी शासन को उखाड़ फेंका। बुद्धदेव भट्टाचार्य की हार और राइटर्स बिल्डिंग से लाल झंडे का हटना भारतीय राजनीतिक इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक थी। उस समय ममता ने कसम खाई थी कि वह बंगाल से वामपंथ का नामोनिशान मिटा देंगी।

जमीनी कार्यकर्ताओं का टकराव

बंगाल के गांवों में आज भी टीएमसी और वामपंथी कार्यकर्ताओं के बीच खूनी संघर्ष का इतिहास रहा है। क्या शीर्ष नेतृत्व के हाथ मिलाने से जमीनी स्तर पर कार्यकर्ता एक-दूसरे को स्वीकार करेंगे। वामदलों के लिए ममता बनर्जी आज भी उनकी सत्ता छीनने वाली नेता हैं। माकपा के कई नेता ममता पर ही भाजपा को बंगाल में जगह देने का आरोप लगाते रहे हैं। धुर-वामपंथी समूह अक्सर संसदीय राजनीति से दूरी बनाकर रखते हैं या बेहद कट्टर रुख अपनाते हैं। ममता का उन्हें साथ आने का न्योता देना यह दर्शाता है कि वह भाजपा के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। ममता बनर्जी का यह हृदय परिवर्तन राजनीति की उस कड़वी सच्चाई को दर्शाता है।

आज की मजबूरी या आगे की रणनीति

पिछले एक दशक में बंगाल की राजनीतिक जमीन पूरी तरह बदल चुकी है। वामदल हाशिए पर चले गए हैं और भाजपा मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी है। ममता बनर्जी अब महसूस कर रही हैं कि मतों का बिखराव अंतत : भाजपा को फायदा पहुंचाता है। हालिया बयानों में ममता ने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रीय स्तर पर और विशेष रूप से बंगाल में भाजपा के विजय रथ को रोकने के लिए विपक्ष की एकता अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि यदि देश को बचाना है और धर्मनिरपेक्षता को कायम रखना है तो सभी गैर-भाजपाई ताकतों को एक साथ आना होगा। इसमें उन्होंने विशेष रूप से वाम और घोर वामपंथी विचारधारा वाले समूहों का नाम लेकर सबको चौंका दिया है।

परिक्रमा

भाजपा मध्यप्रदेश में युवा एवं जिताऊ प्रत्याशियों की तलाश में

अरुण पटेल

लेखक
सुबह सवेरे के
प्रबंध संपादक हैं

राज्य मध्यप्रदेश में स्थानीय निकाय चुनावों के लिए भाजपा युवा नेतृत्व व नये चेहरों को मौका देती नजर आ रही है ताकि जमीनी स्तर पर नेतृत्व परिवर्तन का एहसास हो सके। यही कारण है कि उपयुक्त और जीतने योग्य उम्मीदवारों की खोजबीन का काम भारतीय जनता पार्टी ने प्रारंभ कर दिया है। ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि अब उन लोगों की टिकटों पर कैंची चल सकती है जो 60 वर्ष से अधिक आयु के हैं और लगातार तीन बार पार्षद रह चुके हैं। इनमें से उसे ही अपवाद स्वरुप टिकट मिल सकती है जिसका कोई उचित जीतने योग्य विकल्प पार्टी को न मिले। चूंकि संचार और लोगों तक पहुंचने के संसाधन बदल रहे हैं तथा हर व्यक्ति के पाकेट में मोबाइल के रुप में चलता-फिरता संसार समाया हुआ है और वह उसमें देख सकता है कि कौन कितना सक्रिय है। ऐसा समझा जाता है कि इंटरनेट मीडिया पर उम्मीदवारों की सक्रियता और उनके समर्थकों की संख्या व डिजिटल जुड़ाव को प्रत्याशी चयन का अहम् आधार बनाया गया है। अगले वर्ष यानी 2027 में नगरीय निकाय के चुनाव प्रस्तावित हैं और यदि यह चुनाव समय पर होते हैं तो फिर अभी से चुनावी नगाड़े शनैः-शनैः बजने लगेंगे जो धीरे-धीरे तेज होते जायेंगे। इससे पूर्व जब नगर निगम के चुनाव हुए थे उस समय 16 नगर निगमों में से 5 में कांग्रेस और एक में आम आदमी पार्टी का महापौर चुना गया था। इसके अतिरिक्त अन्य नगरपालिकाओं व नगर परिषदों में भाजपा का दबदबा साफ-साफ नजर आ रहा था। इन निकायों में अध्यक्ष के चुनाव सीधे जनता के स्थान पर पार्षदों के माध्यम से कराये गये थे। चूंकि मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने फिर निर्णय बदल लिया है और अब अध्यक्षों का चुनाव सीधे जनता द्वारा मतदान से कराया जायेगा इसलिए अब सीटों का भी आरक्षण करना होगा।

भारतीय जनता पार्टी ने यह तय कर लिया है कि चुनाव के ठीक पहले के बजाय अभी से प्रत्याशी तय करने की दिशा में काम किया जाये। संगठन के फीडबैक के आधार पर संभावित प्रत्याशी को लेकर सर्वे भी कराया जायेगा। भाजपा के संभागीय और जिला प्रभारियों की भी जिम्मेदारी तय कर दी गयी है कि वे अपने-अपने प्रभार के क्षेत्र में ऐसे युवाओं को चिन्हित करें जो पार्टी में सकिय व लोकप्रिय हों, ऐसे युवाओं के नाम ही आगे बढ़ाये जायेंगे। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपना दबदबा राजनीति में स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन को मध्यप्रदेश आने का निमंत्रण दिया है ताकि वह जो कदम सभी वर्गों के कल्याण के लिए उठा रहे हैं उसे राष्ट्रीय अध्यक्ष के सामने प्रस्तुत किया जा सके। संदीपनी विद्यालय डॉ. यादव का एक पसंदीदा ड्रीम प्रोजेक्ट है और इसको देखने के लिए ही उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष को मध्यप्रदेश में आने का न्यौता दिया है। उन्हें यह आश्वासन मिला है कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान भी मध्यप्रदेश आयेंगे। धर्मेन्द्र प्रधान जून माह के पहले पखवाड़े में आ सकते हैं। चूंकि मध्यप्रदेश में केंद्रीय शिक्षा नीति सबसे पहले लागू हुई है इसलिए डॉ. यादव चाहते हैं कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री भी मध्यप्रदेश आयें, क्योंकि उन्हें भरोसा है कि उनके द्वारा स्थापित संदीपनी विद्यालय पूरे देश के लिए मॉडल बनेंगे।

बंगाल में खिला कमल और दक्षिण में जोर मारता पंजा

चुनावी नतीजे सामने आ गये हैं और भारतीय जनता पार्टी जिस प्रकार से चुनाव की व्यूहरचना बनाती है और आगे बढ़ रही है उसी तरह दक्षिण भारत के कुछ राज्यों में पंजा अपना जोर दिखा रहा है। भले ही इससे उसके पुराने सहयोगी नाराज हो जायें लेकिन कांग्रेस फिलहाल तामिलनाडु में सत्ता में भागीदारी करने जा रही है तो वहीं केरल में उसका अपना प्रभाव साफ नजर आ रहा है तथा अपने सहयोगियों के साथ उसने केरल में विजय हासिल कर ली है। आने वाले कुछ माहों में ही पता चल सकेगा कि सत्ता की यह भागीदारी कांग्रेस के लिए जोखिमपूर्ण रही या नहीं। मध्यप्रदेश में निकाय चुनाव अगले वर्ष होंगे लेकिन भाजपा ने अभी से फूंक-फूंक कर कदम रखने चालू कर दिये हैं, देखने वाली बात यही होगी कि कांग्रेस इसके उत्तर में क्या करती है।

और यह भी

नगरपालिका पार्षद से 31 साल पहले अपना राजनीतिक सफर तय करते हुए आखिरकार 56 साल के सुवेंदु अधिकारी पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री के पद तक पहुंचने में सफल रहे हैं। उनके पिता शिशिर अधिकारी डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में मंत्री रहे तो उनके दो भाई दिवेंदु और सामेंदु भी सांसद रहे हैं। वामपंथियों का शासन उखाड़कर फेंकने वाले नंदीग्राम आंदोलन के अगुवा सुवेंदु ही थे, लेकिन ममता बनर्जी से मतभेद गहराने के कारण वे भाजपा में शामिल हो गये और अंततः पश्चिम बंगाल के सत्ताशीर्ष पर पहूंचने में सफल रहे।

हम सबके जीवन का मूल आधार है मां : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने मातृ दिवस पर मातृ शक्ति को किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मातृ दिवस पर प्रदेश की सभी मातृ शक्ति को नमन किया है। उन्होंने कहा है कि मां हम सभी के जीवन का मूल आधार है। माँ हमें संस्कार और सत्य एवं संघर्ष के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हम सभी पर माँ का आशीर्वाद हमेशा बना रहे, ऐसी मंगलकामनाएं की हैं।

क्या राजनीतिक रसूख कानून से बड़ा हो गया है?: संगीता शर्मा

भोपाल। मध्यप्रदेश में महिला न्याय को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा 29 अप्रैल को राज्यपाल को सौंपे गए ज्ञापन पर अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं होने से मामला गरमा गया है। मातृ दिवस के अवसर पर इस मुद्दे ने और अधिक संवेदनशील रूप ले लिया है, जहां एक पीड़ित महिला को न्याय दिलाने की मांग तेज हो गई है।

प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता एवं पूर्व सदस्य मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग सुश्री संगीता शर्मा ने अपने सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट करते हुए लिखा है कि पूर्व सांसद एवं वर्तमान विधायक डॉ. चिंतामणि मालवीय पर महिलाओं के साथ कथित अशोभनीय व्यवहार, यौन शोषण, पद के दुरुपयोग एवं अन्य आपराधिक कृत्यों के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। साथ ही यह भी उल्लेख किया गया है कि पूर्व में की गई शिकायतों पर भी प्रभाव के चलते कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हो सकी।

कांग्रेस प्रवक्ता एवं पूर्व सदस्य मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग सुश्री शर्मा ने कहा है कि 29 अप्रैल को विधिवत ज्ञापन सौंपे जाने के बावजूद अब तक कोई स्पष्ट प्रगति या जांच की स्थिति सामने नहीं आई है, जिससे पीड़ित पक्ष में निराशा और असंतोष बढ़ रहा है। कांग्रेस ने इस पूरे मामले में निष्पक्ष और समयबद्ध जांच की मांग करते हुए दोष सिद्ध होने पर कड़ी वैधानिक कार्रवाई एवं संबंधित विधायक की विधानसभा सदस्यता समाप्त करने की बात दोहराई है।

इसके अतिरिक्त एक वृद्ध महिला की संपत्ति पर कथित अवैध कब्जे का मामला भी उठाया गया है, जिसे कानून व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय बताया गया है।

मातृ दिवस के संदर्भ में संगीता शर्मा ने कहा है कि यदि एक पीड़ित को न्याय नहीं मिल पाता, तो महिला सम्मान के दावे खोखले साबित होते हैं। सुश्री शर्मा ने महामहिम राज्यपाल महोदय और शासन-प्रशासन से शीघ्र कार्रवाई कर न्याय सुनिश्चित करने की मांग की है।

मेपकॉस्ट में आज मनेगा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

भोपाल। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल द्वारा इस वर्ष भी 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन परिषद मुख्यालय के मुख्य सभागार में किया जा रहा है। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर भोपाल शहर के विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग विषयों से संबंधित 27 शिक्षण संस्थानों के 250 से अधिक विद्यार्थी एवं शिक्षकगण सम्मिलित होंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नवाचार तथा तकनीकी जागरूकता को बढ़ावा देना है। आयोजन के अंतर्गत डॉ. राजीव अग्रवाल, उद्योगपति, लाइफ कोच, मेंटर एवं मोटिवेशनल गुरु तथा डॉ. विजय भास्कर सेमवाल, सहायक प्रोफेसर, कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग विभाग, मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट), भोपाल के ख्याति प्राप्त विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किए जाएंगे, जिनमें आधुनिक तकनीकों, नवाचार तथा राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की भूमिका पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की जाएगी।

कार्यक्रम के दौरान रोबोटिक्स पर एक विशेष कार्यशाला का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें अर्पित सोनी, निदेशक, रोबोनॉट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल द्वारा प्रतिभागियों को रोबोटिक्स एवं आधुनिक तकनीकी अनुप्रयोगों की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की जाएगी। इस कार्यशाला में विद्यार्थी टीमों के माध्यम से मॉडल्स तैयार करेंगे । कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों को रोबोटिक्स एवं ऑटोमेशन के क्षेत्र को समझने का अवसर प्राप्त होगा।इस अवसर पर परिषद के कार्यकारी निदेशक डॉ.विवेक कटारे, परिषद के प्रधान वैज्ञानिक एवं विज्ञान लोकव्यापीकरण योजना के प्रभारी डॉ विकास शेंडे भी विद्यार्थियों से भारत द्वारा विकसित देशज प्रौद्योगिकी के बारे में संवाद करेंगे ।

भोपाल में बेतवा नदी को पुनर्जीवित करने की पहल

झिरी में उद्गम स्थल पर जुटे लोग, कहा-यहां से कुरवाई तक चलेगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पास ग्राम झिरी स्थित बेतवा नदी के सूखे उद्गम स्थल को पुनर्जीवित करने और नदी को प्रदूषण से बचाने के लिए रविवार से पहल शुरू हो गई। यहां पर बड़ी संख्या में भोपाल, इंदौर के रिटायर्ड अफसर और एक्सपर्ट जुटे। बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण ग्रुप के बैनरतले पुनर्जीवित करने के लिए मंथन किया।

मप्र-छत्तीसगढ़ के पूर्व आयकर आयुक्त आरके पालीवाल के नेतृत्व में रविवार को बेतवा उद्गम स्थल कोलार डेम के नजदीक बैठक हुई। इसमें निर्णय लिया गया कि भोपाल से कुरवाई तक नदी में स्वच्छ्ता अभियान चलाया जाएगा।

जनभागीदारी से बीते साल 55 चेक डेम बनाए गए थे। इस बार वन समितियां भी जुड़ गई हैं। वहीं, वन विभाग के कई रिटायर्ड अफसर जुड़े हैं। इसलिए उद्गम से ऊपर ओर

बीते साल से अधिक चेक डेम बनाए जाएंगे। इस मुहिम में मप्र हाईकोर्ट से जल संरक्षण के लिए नियुक्त एडवोकेट मनीष विजयवर्गीय, डॉ सुरेश गर्ग, कई वन अधिकारी शामिल हुए।

बेतवा बचाओ अभियान का यह उद्देश्य

बेतवा नदी में निरंतर बढ़ते प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण समूह ने फरवरी मार्च 2023 में बेतवा नदी की अध्ययन एवं जनजागरण यात्रा आयोजित की थी। सात दिन की उस यात्रा में बेतवा नदी के उद्गम स्थल झिरी ग्राम से कुरवई तक स्थित नदी के किनारे के लगभग दो दर्जन गांवों और आधा दर्जन कस्बों और शहरों के स्कूल, कॉलेज के विद्यार्थियों, प्रबुद्ध जनों और ग्राम निवासियों से बेतवा की बदतर होती स्थिति पर गंभीर चर्चा और जन-जागरण किया था।साल 2025 में बेतवा नदी का उद्गम स्थल सूख गया था। नदी के सूखे उद्गम स्थल को जन-सहभागिता से पुनर्जीवित करने के लिए पिछले साल बेतवा अध्ययन एवं जनजागरण समूह ने एक सप्ताह के श्रमदान से 55 चैक डैम बनाकर उद्गम स्थल को आंशिक रूप से पुनर्जीवित किया था। श्रमदान में भोपाल, विदिशा, सीहोर, बैतूल, इंदौर से सैकड़ों प्रकृति प्रेमी शामिल हुए थे। इस साल भी यह समूह 10 से 16 मई तक बेतवा नदी के उद्गम स्थल पर जन सहभागिता से श्रमदान सप्ताह का आयोजन कर रहा है।

प्राइवेट अस्पतालों की सही रिपोर्टिंग जरूरी

तभी महामारी की सही तस्वीर सामने आएगी, सीएमएचओ बोले- अधूरी रिपोर्टिंग से बिगड़ सकते हैं फैसले

भोपाल (नप्र)। संक्रामक रोगों की समय पर पहचान, रोकथाम और संभावित आउटब्रेक से निपटने के लिए प्राइवेट अस्पतालों और स्वास्थ्य संस्थाओं की सक्रिय भागीदारी बेहद जरूरी है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) भोपाल डॉ. मनीष शर्मा ने कहा कि महामारी के पैटर्न को समझने और आउटब्रेक मैनेजमेंट को प्रभावी बनाने के लिए निजी स्वास्थ्य संस्थाओं की रिपोर्टिंग अहम भूमिका निभाती है।

राष्ट्रीय एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य विभाग भोपाल ने निजी अस्पतालों और स्वास्थ्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों के लिए कार्यशाला आयोजित की। इसमें संक्रामक रोगों की निगरानी और समयबद्ध रिपोर्टिंग के लिए जरूरी फॉर्मेट, प्रक्रिया और कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई।

संक्रामक रोगों का डेटा बेहद जरूरी

डॉक्टर्स ने प्राइवेट सेक्टर के रिपोर्टिंग सही ढ़ंग से होने पर चर्चा की। डॉक्टर्स ने प्राइवेट सेक्टर के रिपोर्टिंग सही ढ़ंग से होने पर चर्चा की।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए डॉ मनीश शर्मा ने कहा कि भोपाल जैसे बड़े शहरों में शासकीय संस्थानों के साथ-साथ निजी स्वास्थ्य संस्थाएं भी बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य सेवाएं दे रही हैं। ऐसे में संक्रामक रोगों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए प्राइवेट सेक्टर से डेटा मिलना बेहद जरूरी है। उन्होंने मातृ स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए अनमोल पोर्टल पर नियमित प्रविष्टियों की भी जानकारी साझा की।

कार्यशाला में विशेषज्ञों ने बताया कि बीमारियों से जुड़ी जानकारी समय पर सरकार तक पहुंचने से संक्रमण की शुरुआती पहचान, अलर्ट जारी करने और आउटब्रेक मैनेजमेंट में तेजी आती है। सिर्फ सरकारी अस्पतालों के डेटा के आधार पर उभरती महामारियों या स्वास्थ्य आपात स्थितियों का सही आकलन संभव नहीं है।

अंडर रिपोर्टिंग खतरनाक है

विशेषज्ञों ने चेताया कि अंडर रिपोर्टिंग की वजह से बीमारी के वास्तविक प्रसार का अनुमान प्रभावित हो सकता है, जिससे नीति और उपचार स्तर पर गलत निर्णय लेने का खतरा बढ़ जाता है। कार्यशाला में यह भी स्पष्ट किया गया कि नोटिफायबल डिजीज रिपोर्टिंग के कानूनी दायरे में निजी अस्पताल और हेल्थ फैसिलिटीज भी आते हैं। ऐसे में रिपोर्टिंग सिर्फ वैज्ञानिक जरूरत नहीं, बल्कि कानूनी जिम्मेदारी भी है।

टिंबर मार्केट में आग, डेढ़ घंटे में बुझी

20 फीट तक ऊपर उठी लपटें; पीछे से गुजरती रही ट्रेनें

भोपाल (नप्र)। भोपाल शहर के बीचोंबीच टिंबर मार्केट में रविवार को फिर आग लग गई।

लकड़ी की एक दुकान में लगी आग इतनी भीषण थी कि लपटें 20 फीट तक ऊपर उठ गईं। इसके ठीक पीछे रेलवे ट्रैक है। जहां से ट्रेनें गुजरती रहीं। तेज हवा की वजह से डेढ़ घंटे में आग काबू आ पाई।

आग लगने की घटना दोपहर करीब 2 बजे की है। बरखेड़ी ऑटो स्टैंड के पास टिंबर दुकान में आग लग गई। धीरे-धीरे आग तेजी से फैलती गई। दमकल की मदद से उसे बुझाया जा सका।

अर्जुन नगर से हटाई 38 झुग्गियां

अयोध्या बायपास के 10 लेन में आड़े आ रही थीं; परिवारों की लालपुरा में शिफ्टिंग

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अयोध्या बायपास को 10 लेन में बदला जा रहा है।

इस प्रोजेक्ट में कई दुकानें, मकान, धार्मिक स्थल और सरकारी भवन बाधा बन रहे हैं। जिन्हें हटाया जा रहा है। रविवार को अर्जुन नगर से कुल 38 पक्की झुग्गियां हटाई गई हैं।

यहां रह रहे परिवारों को जमुनिया ग्राम पंचायत के गांव लालपुरा में शिफ्ट किया गया है।

गोविंदपुरा एसडीएम भुवन गुप्ता ने बताया कि झुग्गी में रह रहे परिवारों को पहले ही नोटिस दिए जा चुके थे। वहीं, शनिवार को अनाउंसमेंट भी किया था। इसके चलते कई लोगों ने स्वैच्छा से अपने मकान खाली कर दिए थे। बाकी को रविवार को हटाया गया।

प्रदेश में अब चलेगी लू, आंधी-बारिश का दौर थमेगा

रतलाम में 44 डिग्री पर पहुंचा दिन का तापमान, भोपाल, इंदौर, उज्जैन में भी 2 से 4 डिग्री बढ़ेगा

भोपाल (नप्र)। एमपी में अब आंधी, बारिश, ओले का दौर थमेगा और तेज गर्मी पड़ेगी। मौसम केंद्र ने 12 मई से प्रदेश में लू का अलर्ट जारी किया है। रविवार से ही गर्मी असर दिखाने लगेगी। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर समेत पूरे प्रदेश में दिन का पारा 2 से 4 डिग्री तक बढ़ सकता है।

इससे पहले शनिवार को प्रदेश में एक ट्रफ और एक साइक्लोनिक सकुर्लेशन (चक्रवात) की एक्टिविटी देखने को मिली। इस वजह से कई शहरों में बादल छाए रहे।

शाम को भोपाल, बैतूल, सिवनी, पांढुर्णा, डिंडौरी, अनूपपुर, रायसेन, गुना, विदिशा, राजगढ़, सागर, जबलपुर, दमोह, बालाघाट, मंडला, उमरिया, शहडोल और छिंदवाड़ा में बारिश हुई और आंधी चली।

मई में पहली बार तेज गर्मी का दौर

प्रदेश में 30 अप्रैल से आंधी-बारिश का दौर शुरू हो गया था। लगातार 10 दिन यानी, 9 मई तक प्रदेश में बारिश हुई। कभी वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) का असर देखने को मिला तो कभी चक्रवात और ट्रफ का। इस वजह से मई के पहले सप्ताह में बारिश हुई। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि 10 मई से प्रदेश में मौसम साफ रहेगा। इससे गर्मी का असर बढ़ने लगेगा। 12-13 मई को पश्चिमी हिस्से के कुछ जिलों में लू का अलर्ट भी किया है।

संपादकीय

सीएम विजय: कांटों का ताज

तमिलनाडु में धूमकेतु की तरह उभरी नवोदित तमिलगा वेत्री कषघम (टीवीके) पार्टी के मुखिया जोसेफ विजय चंद्रशेखर ने मुख्यखमंत्री पद की शपथ लेकर सरकार तो बना ली है, लेकिन यह उनके लिए कांटो के ताज से कम नहीं है। चुनाव नतीजों के बाद जारी अटकलों के दौर के बीच रविवार को मुख्यमंत्री विजय और उनके नौ सहयोगियों ने जैसे ही पद और गोपनीयता की शपथ ली, वैसे ही उनके समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई। शपथ लेते ही विजय ने मंच पर ही तीन अहम फैसलों का ऐलान किया। ये हैं हर घर को 200 यूनिट फ्री बिजली, नशे की समस्या से निपटने के लिए हर ज़िले में विशेष बल का गठन और महिलाओं की सुरक्षा के लिए एक स्पेशल टास्क फ़ोर्स बनाना शामिल है। गौरतलब है कि हाल में हुए विधानसभा चुनाव में टीवीके 234 में से 107 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, लेकिन बहुमत के आंकड़े से 11 दूर रह गई। टीवीके को सबसे पहले कांग्रेस ने अपने 5 विधायको के समर्थन की पेशकश की। लेकिन बाकी दल सौदेबाजी करते रहे। अंततः 4 वामपंथी, 2 वीसीके और 2 इंडियन मुस्लिम लीग के विधायकों ने समर्थन पत्र दिया, जिस के बाद राज्यपाल ने विजय को सीएम पद की शपथ दिलाई। हालांकि विजय की अनुभवहीनता और अति उत्साह शपथ ग्रहण के दौरान भी दिखा, जब राज्यपाल द्वारा शपथ दिलाना शुरू करते ही वो शपथ पढ़ने की जगह भाषण देने लगे। इस पर राज्यपाल को उन्हें टोकना पड़ा। विजय ने शपथ तो ले ली है, लेकिन उनकी असली अग्नि परीक्षा अब शुरू हुई है। सबसे पहले तो उन्हें 13 मई को सदन में अपना बहुमत सिद्ध करना है। इसको लेकर शंका का कारण है कि भले ही पांच दलों ने उन्हें समर्थन की चिट्ठी सौंप दी है, लेकिन इनमें से कोई भी सरकार में शामिल नहीं है। कम्युनिस्ट पार्टियों ने तो साफ कह दिया है कि वो भाजपा को रोकने के लिए विजय को समर्थन दे रही हैं। वो सरकार में शामिल नहीं होंगी। अलबत्ता कांग्रेस सरकार में शामिल होने के लिए जरूर उत्सुक है। यही कारण है कि राहुल गांधी खुद शपथ ग्रहण में शामिल हुए। नए सीएम विजय के सामने दो बड़ी चुनौतियां हैं। एक तो उन्हें लगातार समर्थन देने वाले दलों के दबाव में काम करना होगा, दूसरे उन्होंने जो लोगों से बड़े बड़े वादे कर रखे हैं, उसे पूरा करना और पूरा करने के लिए पर्याप्त धन का इंतजाम करना होगा। माना जा रहा है कि विजय के इन वादों को पूरा करने के लिए राज्य को 1 लाख करोड़ रू. की जरूरत होगी, जो अकेले तमिलनाडु सरकार के बस की नहीं है। समर्थक दल विजय को केन्द्र सरकार के आगे झुकने नहीं देंगे और केन्द्र सरकार कांग्रेस समर्थिक सरकार को काम करने नहीं देगी। हालांकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुख्यिमंत्री बनने पर विजय को बधाई दी है, लेकिन इसमें यही संदेश छिपा है कि वो कांग्रेस के बहुत करीब नहीं जाएं। दूसरी तरफ पीएम ने विजय की शपथ ग्रहण के तुरंत बाद एक कार्यक्रम में कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस एक धोखेबाज पार्टी है। तमिलनाडु में सत्ता जाते ही उसने डीएमके को धोखा दिया। इस आरोप पर डीएमके की तरफ से कोई जवाब नहीं आया है। लेकिन यह तय है कि विजय सरकार को एक तरफ डीएमके तो दूसरी तरफ एआईएडीएमके से लगातार चुनौती मिलती रहेगी। दरअसल भाजपा चाहती थी कि विजय एनडीए सदस्य एआईएडीएमके के साथ मिलकर सरकार बनाए। इससे परोक्ष रूप से भाजपा का विजय सरकार पर नियंत्रण रहता और कांग्रेस भी सत्ता से बाहर रहती। लेकिन विजय के कांग्रेस के साथ जाने से सारा गणित गड़बड़ा गया है।

नजरिया

पड़ौसी देशों में राजनीतिक हलचल?

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

भारत के दो पड़ोसी देशों के चुनाव हाल ही में संपन्न हुए। दोनों जगह अलग-अलग ढंग से जेन जी याने वह युवा पीढ़ी जो 1997 या उसके बाद की है, के द्वारा सरकारों के विरुद्ध विद्रोह हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप वहां की सरकारें भंग हुई तथा वहाँ नये चुनाव हुए। वैसे तो कुछ दिनों पूर्व श्रीलंका के भी चुनाव ऐसे ही जेन जी के आंदोलन के बाद हुए थे जिसमें काफी हिंसा और लूटपाट हुई थी और वहाँ की लंबे समय से निर्वाचित सरकार को हटना पड़ा और सेना ने नियंत्रण किया था। वहाँ एक नौजवान चुनकर आये व राष्ट्रपति बने तथा ऐसा कहा जाता है कि वे मार्क्सवादी है और चीन समर्थक है। हालांकि अभी तक उन्होंने चीनी विदेश नीति के लक्ष्यों को कम से कम जाहरातौर पर अमल में नहीं लाया है और न ही उसके वे खिलाफ भी है। याने विचारधारा चाहे जो भी हो परंतु वे अपने देश के हितों के अनुकूल शांत तरीके से निर्णय लेकर आगे बढ़ रहे हैं। श्रीलंका और भारत के बीच में उन्होंने चीनी लाइन को बाधा नहीं बनने दिया। यह उनकी समझदारी और विदेश नीति का संतुलन ही कहा जाना चाहिए।

बंगलादेश में जो इस्लामिक युवा विद्रोह हुआ था। उस समय एक चिंता भारत व अन्य देशों में उत्पन्न हुई थी कि उसके बाद बंगलादेश कहीं फिर से सैनिक तानाशाही में तो नहीं फँस जायेगा। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती हसीना को सेना के संकेत पर देश छोड़कर भागना पड़ा और उन्होंने भारत में शरण ली। श्री युनूस को विदेश से वापिस बुलाकर उनको देश का कार्यभार सौंपा गया, जिसे सेना ने भी स्वीकार किया था। यह आश्चर्यजनक भी था कि युनूस को अमेरिका समर्थक माना जाता है। उन्हें एक प्रकार सेना ने स्वीकार किया, बंगलादेश के लोगों ने स्वीकार किया, उससे इतना संकेत तो मिलता ही है कि बंगलादेश की उथल पुथल की डोर कहीं न कहीं अमेरिका के पास रही है। वहाँ, इस्लामिक छात्रों ने तत्कालीन शेख हसीना की सरकार व उनकी पार्टी के खिलाफ हिंसक विद्रोह शुरू किया था। प्रधानमंत्री से लेकर अनेकों मंत्रियों को भागना पड़ा था और सेना ने भी एक प्रकार से विद्रोही इस्लामिक कटटरपंथियों का साथ दिया था। उस समय तीन प्रकार की संभावनायें सामने आई थीं एक, श्री युनूस अंतरिम कार्यकारी मुखिया थे ही उनको बंगलादेश का आगामी मुखिया बनाया जा सकता था। दूसरा, जिन कटटरपंथी युवाओं ने वहां विद्रोह शुरू किया था, तब मुझे लगता है कि यह विदेशी शक्तियों द्वारा प्रायोजित था। चुनावों के बाद उनकी सत्ता आयेगी, तीसरा अनुमान था कि सेना ही सत्ता अपने हाथ में ले लेगी। इन सब घटनाक्रम के पीछे चीन और अमेरिकन शक्तियों का अनुमार्तित संघर्ष लगता था। शेख हसीना चीन के दौरे से लौटकर आई थीं और सत्ता पलट का खेल शुरू हो गया था। याने चीन के साथ उनका जो अंतर संबंध था वह दुनिया के चीन विरोधी समूह को स्वीकार नहीं था। बंगलादेश में भी आश्चर्यजनक रूप से उसी प्रकार सेना ने भूमिका अदा की जिस प्रकार श्रीलंका में मिस्र में या एक जमाने में रूस में की थी। एक अर्थ में स्थिति साफ है कि बंगलादेश की सेना कहीं न कहीं भले ही अपने आर्थिक या अन्य हितों के चलते वैश्विक शक्तियों के इशारे पर काम कर रही थी।

जिस घटनाक्रम को लेकर बंगलादेश में छात्रों का आंदोलन शुरू हुआ था, जो बाद में सारे बंगलादेश में फैला। बाद में यह कटटरपंथी इस्लामिक छात्रों व युवा नेतृत्व के पास चला गया था। इस आंदोलन की शुरूआत एक मामूली घटना से हुई थी। शेख हसीना की सरकार ने बंगलादेश की मुक्ति वाहनी (जो उनके स्वरू पिता व बंगलादेश के जनक शेख मुजीब के द्वारा बनाई गई थी) के उन परिवारजनों को जो बंगलादेश के निर्माण आंदोलन में जेलों में गये थे, यातनायें सही थी, पाकिस्तानी जुल्म सहे थे, को विभिन्न शासकीय पदों व नीतियों में आरक्षण में वृद्धि दी, जिसके खिलाफ आंदोलन शुरू हुआ था। यह बात भी सही है कि बंगलादेश के निर्माण व इस आंदोलन को आज लगभग 55 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और इस आंदोलन के हिस्सेदार लोग अब बहुत कम ही बचे है परंतु उनके परिजनों को मिल रही आरक्षण और वृद्धि के प्रस्ताव का विरोध इन नौजवानों द्वारा किया था। इसको लेकर पहले मुक्ति वाहिनी के समर्थक छात्रों और आरक्षण के विरोधी छात्रों के मध्य टकराव शुरू हुआ जो बढ़कर बंगलादेश में सत्ता परिवर्तन का कारण बना। कभी-कभी ऐसी कुछ घटनायें आश्चर्यजनक ढंग से होती हैं जहां पर छोटे से सवालों से शुरू हुए आंदोलन, कुछ ही दिनों में विशालकाय आंदोलन का रूप ले लेते है। 1974 में गुजरात में छात्रों का आंदोलन छात्रावास में मेस की थाली के दाम बढ़ाने से शुरू हुआ था जो बाद में गुजरात सरकार को भंग करने का कारण बना। फिर बिहार व देश के अनकों इलाकों में यह आंदोलन फैला, देश में आपातकाल लगा और देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को सत्ता से हटना पड़ा।

श्री युनूस के कार्यकाल के दौरान कट्टरपंथी युवकों के द्वारा काफी हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया गया, विशेषतौर से अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय को हिंसा का शिकार बनाया गया, इस्कान के मुखिया को मारा गया, कई को गिरफ्तार किया गया और ऐसा लग रहा था कि बंगलादेश चुनाव में जनमत कट्टरपंथियों के साथ जायेगा। अब चुनाव के बाद बंगलादेश में बीएनपी बहुमत से सरकार में आई है और तारिक रहमान जो जिया उर्र रहमान के बेटे हैं, जिनकी माँ भी प्रधानमंत्री रही हैं, अब देश के प्रधानमंत्री बने हैं। उनकी सरकार के एक मंत्री जो हिंदू समुदाय से हैं, (श्री चौधरी) ने सार्वजनिक रूप से बयान दिया है कि अल्पसंख्यकों को वैसे ही अधिकार होंगे जैसे बहुसंख्यकों को है। इस बयान के बाद अल्पसंख्यक समुदाय में उठ रही शंकाओं का कुछ हद तक हल हुआ, और कुछ वातावरण भी बदला है। श्री तारीक रहमान भी लगभग 18 वर्ष के निर्वासन के बाद विदेश से लौटे हैं। वह सुशिक्षित व्यक्ति हैं, अगर वे राजनीति को प्रतिहिंसा का माध्यम नहीं बनायेंगे तो यह उनकी बड़ी सफलता होगी। हालांकि अभी हिंसा, प्रतिहिंसा के बादल मौजूद हैं। बंगलादेश के चुनाव में शेख हसीना की पार्टी को चुनाव लड़ने का मौका नहीं दिया गया और यह एक प्रकार से एक दलीय चुनाव हुआ है। शेख हसीना की पार्टी वहां के चुनाव को रद्द करने की मांग कर रही है और यह आंदोलन बढ़ेगा, तो यह भी भारत के लिये एक समस्या बनेगा। बंगलादेश में श्रीमती हसीना के खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज हुए हैं जिनमें उन्हें आजीवन कारावास और मृत्युदंड तक दिया जा सकता है। अभी तक बंगलादेश में हिंसा प्रतिहिंसा का चलन रहा है। बंगलादेश के जनक स्वरू शेख मुजीब की हत्या हुई उसके बाद जियाउर्र रहमान की हत्या हुई, उनकी पत्नी व रहमान को बाहर रहना पड़ा। मोहम्मद युनूस को बंगलादेश से निर्वासित किया गया। याने एक प्रकार से सत्ता के द्वारा प्रतिपक्ष व विरोधियों के दमन का जो सिलसिला शुरू हुआ है वह अभी थमा नहीं है। फिर तारिक रहमान उसे कैसे हल करेंगे, पुराने प्रतिहिंसा के रास्ते पर चलेंगे या उसे समाप्त करने के उपाय खोजेंगे यह कहना अभी संभव नहीं है। अपनी पीड़ाओं को भुलाकर अपने विरोधियों को माफ करना, सम्मान देना, यह लोकतांत्रिक तो है परंतु मानसिक रूप से आसान नहीं है। फिर शेख हसीना के हटने के बाद बंगलादेश व पाकिस्तान के बीच पुनरू याराना शुरू हुआ है। यद्यपि पूर्व स्थिति की बहाली तो संभव नहीं है परंतु मिलीजुली विदेश नीति भारत के लिये चुनौतियां खड़ी कर सकती है। शेख हसीना को बंगलादेश प्रत्यर्पित करने की मांग भी भारत व बंगलादेश के बीच एक टकराव का कारण बन सकती है। हालांकि अमेरिका के एक सीमित लक्ष्य की पूर्ति याने समर्थक और दोस्ती करने वाली सरकार हट गई है। पर अब यथास्थिति को बनाये रखने का उद्देश्य हो सकता है।

नेपाल में भी जेन जी के नौजवानों ने अचानक आंदोलन शुरू किया था जिसमें भारी हिंसा हुई और अंत में सैन्य हस्तक्षेप के बाद प्रधानमंत्री का इस्तीफा हुआ तथा श्रीमति कार्की को कार्यकारी प्रधानमंत्री बनाया गया। वहाँ चुनाव में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के तीनों धड़े श्री ओली, प्रचंड तथा नेपाली कांग्रेस पूरी तरह पराजित हुए हैं और राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के नाम से श्री वीरेन्द्र शाह को जन समर्थन मिला है। श्री वीरेन्द्र शाह को उनके दल ने बहुमत से प्रधानमंत्री पद के लिये उनका चुनाव किया। इससे अब नेपाल में फिर से सामंतवाद का जन्म हो सकता है। श्री वीरेन्द्र शाह युवा हैं, परंतु उनका स्वभाव कितना उग्र व अमर्यारित है जिसे एक घटना से जाना जा सकता है। चुनाव से पहले उनकी पत्नी की कार को पुलिस ने रोक लिया और श्री बालेन शाह वहाँ पहुंचे तथा उन्होंने वहाँ कहा कि मैं तुम्हारी गद्दी को भी जला दूंगा। उनका यह बयान उनकी मानसिकता का परिचायक है। उनमें राजतंत्रीय घमंड है और ऐसा लगता है कि वह कानून कायदे को नहीं मानते।

यद्यपि श्री बालेन शाह ने कुछ शुरुआती निर्णय अच्छे किये हैं जैसे उन्होंने निजी शिक्षा बंदकर सारी शिक्षा को सरकारी करने की घोषणा की है। 3 पूर्व प्रधानमंत्रियों की संपत्ति की जांच शुरू की है हालांकि उनका छात्र संघों के चुनावों पर रोक लगाने का निर्णय उचित नहीं है। छात्रसंघ चुनाव लोकतंत्र की पाठशाला होते हैं। और वे स्वतरू भी छात्रों के आंदोलन के बाद ही चुनकर आये हैं। अमेरिका के लिये चीन समर्थक नेपाल मुफीद नहीं था और उससे मुक्ति पाने के लिये नेपाल में सत्ता परिवर्तन उसके अनुकूल है। फिर इन नये शासकों के चाहे बंगलादेश के तारिक रहमान हो, मोहम्मद युनूस हो, नेपाल के वीरेन्द्र शाह हो, इन सभी के के आर्थिक तार अमेरिका से जुड़े हुए हैं। वे सामान्य स्वभाव व आचार विचार से अमेरिका के अनुकूल ही रहेंगे। उनकी भूमिका एक प्रकार से अमेरिका के लिये उनके हितों के संरक्षक,पोषक ईरान के पूर्व शाह जैसी हो सकती है।

जेन जी या छात्रों के विद्रोह के नाम से जहां-जहां भी सत्ता परिवर्तन हुए हैं, उनके कोई अच्छे परिणाम नहीं निकले हैं और एक प्रकार से वे वैश्विक शक्तियों के हितों के टकराव के माध्यम व कारण सिद्ध हुए हैं। अब बंगलादेश व नेपाल में क्या वही दोहराव होगा या कोई नई राजनीति या वैचारिक भूमिका का उदय होगा यह कहना संभव नहीं है।

एक महत्वपूर्ण बात अवश्य है कि श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश के बदलाव के पीछे चाहे जो कारण रहे हो, इसमें दुनिया की शक्तियों की भूमिका रही हो, यह तो निश्चित है कि इन देशों के शासकों ने अपने देश का भविष्य बदलने की कोई चेष्टा नहीं की। वे भी पूर्व सत्ताधीशों के समान यथरू स्थितिवादी, सत्ता लोलुप, भ्रष्ट, अपार संपत्ति को जोड़ने वाले सिद्ध हुए और वह आम जनता का विश्वास खो चुके थे। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि दुनिया की कोई भी सत्ता लंबे समय तक न तो जनता को गुमराह कर सकती, न दबा सकती और न ही उनकी आवाज को दबा सकती है। अब तो सरकारों को अपने आपको बदलकर जनमुखी बनना होगा या जाना होगा।

बदलता भारत, नई रणनीति, नई शक्ति

ऑपरेशन सिंदूर का 1 साल

अंशुमान

लेखक संसद टीवी से संबद्ध पत्रकार हैं।

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ आतंकी हमला केवल एक सुरक्षा घटना नहीं था, बल्कि उसने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति और सैन्य रणनीति को नई दिशा देने का काम किया। इस हमले के पीछे पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का नाम सामने आया। इसके बाद भारत ने जिस तरह से ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया, उसने वैश्विक स्तर पर साफ संकेत दिया कि अब भारत की नीति पहले जैसी सीमित और केवल प्रतिक्रिया देने वाली नहीं रही। सही मायनों में ऑपरेशन सिंदूर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने केवल पाकिस्तान को सैन्य संदेश नहीं दिया, बल्कि पूरी दुनिया को भारत की बदलती रणनीतिक सोच दिखाई। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि आतंकवाद और सीमा पार से होने वाले हमलों को अब केवल कूटनीतिक बयानबाज़ी से नहीं संभाला जाएगा। अगर भारत की सुरक्षा पर हमला होगा, तो उसका जवाब तेज, सटीक और निर्णायक होगा। इस ऑपरेशन ने यह भी दिखाया कि भारत अब स्ट्रेटेजिक रिस्ट्रेंट यानी अत्यधिक संयम की पुरानी नीति से धीरे-धीरे बाहर निकल रहा है।

पिछले 20 सालों में भारत की आतंकवाद के खिलाफ नीति काफी बदल गई है। 2001 में संसद पर हमला और 2008 में मुंबई हमला होने के बाद भारत ने ज़्यादातर कूटनीतिक दबाव और अंतरराष्ट्रीय समर्थन का रास्ता अपनाया। उस समय भारत सीधी सैन्य कार्रवाई से बचता था। लेकिन 2016 के उरी हमले के बाद पहली बार भारत ने खुलकर सर्जिकल स्ट्राइक की। इससे यह साफ संदेश गया कि अब भारत सिर्फ बयान नहीं देगा, बल्कि आतंकियों के ठिकानों पर जवाबी हमला भी करेगा। फिर 2019 में पुलवामा हमले के बाद भारत ने बालाकोट एयरस्ट्राइक की, जिसमें सीमा पार जाकर कार्रवाई की गई। यह पहले से बड़ा और ज्यादा आक्रामक कदम था। 2025 के पहलगाम हमले के बाद शुरू हुआ ऑपरेशन सिंदूर इससे भी आगे माना जा रहा है। इसे सिर्फ बदले की कार्रवाई नहीं, बल्कि भारत की नई सैन्य ताकत और राजनीतिक इच्छाशक्ति के प्रदर्शन के रूप में देखा गया। इस ऑपरेशन में आधुनिक तकनीक, ड्रोन, मिसाइल और तीनों सेनाओं के तालमेल का इस्तेमाल किया गया।

रणनीतिक तौर पर देखें तो अब भारत का संदेश पहले से ज्यादा साफ माना जा रहा है अगर बड़ा आतंकी हमला होगा, तो उसका जवाब सीधे और सख्ती से दिया जाएगा।इस ऑपरेशन के बाद भारतीय सेना ने अपनी संरचना और युद्ध नीति में कई महत्वपूर्ण बदलाव शुरू किए। सबसे चर्चित बदलाव रहा रुद्र ब्रिगेड और भैरव कमांडो यूनिट्स का गठन। रुद्र ब्रिगेड को पाकिस्तान के खिलाफ मैदान वाले इलाकों में तेज और घातक कार्रवाई के लिए तैयार किया गया है। इन यूनिट्स का आकार पारंपरिक बड़ी सेना की तुलना में छोटा है, लेकिन इन्हें ज्यादा मोबाइल, आधुनिक और आक्रामक बनाया गया है। इनका उद्देश्य है कि युद्ध या संकट की स्थिति में भारत बहुत कम समय में कार्रवाई कर सके और दुश्मन को संभलने का मौका न मिले।

दूसरी ओर, भैरव यूनिट्स का गठन चीन और पाकिस्तान दोनों को ध्यान में रखकर किया गया है। भारत को अब यह एहसास हो चुका है कि भविष्य के युद्ध केवल पाकिस्तान तक सीमित नहीं रहेंगे। चीन के साथ गलवान संघर्ष के बाद भारत की रणनीतिक प्राथमिकताएँ बदल चुकी हैं। चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी यानी पीएलए ने पिछले कुछ वर्षों में सीमाओं पर भारी सैन्य ढाँचा तैयार किया है। इसके जवाब में भारत अब पहाड़ी युद्ध, हाई-टेक निगरानी और विशेष कमांडो यूनिट्स पर ज्यादा ध्यान दे रहा है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की नई रक्षा नीति का सबसे बड़ा संदेश यह है कि अब भारत दो मोर्चों वाले खतरे यानी चीन और पाकिस्तान दोनों को एक साथ ध्यान में रखकर तैयारी कर रहा है। पहले भारत की अधिकांश सैन्य तैयारी पाकिस्तान केंद्रित होती थी, लेकिन अब चीन को बड़ा और दीर्घकालिक खतरा माना जा रहा है। यही कारण है कि भारत अपनी सेना को अधिक तकनीकी, तेज और संयुक्त युद्ध क्षमता वाली सेना में बदलने की कोशिश कर रहा है। भारत की नई रणनीति में तकनीक की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है। सेना में शौर्य स्क्वाड्रन नाम के ड्रोन यूनिट्स जोड़े जा रहे हैं। ये ड्रोन निगरानी, दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखने, सटीक हमला करने और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में मदद करेंगे। रूस-यूक्रेन युद्ध ने दुनिया को दिखा दिया कि भविष्य के युद्धों में ड्रोन और मिसाइलें पारंपरिक टैंकों और भारी सेना से कहीं ज्यादा प्रभावी हो सकती हैं। भारत अब इसी दिशा में तेजी से निवेश कर रहा है।

2025 में हुए त्रिशूल सैन्य अभ्यास ने भी भारत की नई सोच को सामने रखा। इसमें थल सेना, वायु सेना और नौसेना ने मिलकर संयुक्त युद्ध अभ्यास किया। इसका उद्देश्य यह दिखाना था कि भविष्य में भारत तीनों सेनाओं को एक साथ जोड़कर 'मल्टी-डोमेन वॉरफेयर' यानी कई क्षेत्रों में एक साथ युद्ध लड़ने की क्षमता विकसित करना चाहता है। आधुनिक युद्ध अब केवल सीमा पर सैनिक भेजने तक सीमित नहीं है। अब साइबर हमला, स्पेस टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, ड्रोन, मिसाइल और सूचना युद्ध भी उतने ही महत्वपूर्ण हो चुके हैं।

ऑपरेशन सिंदूर का एक बड़ा भू-राजनीतिक संदेश भी था। भारत ने केवल पाकिस्तान को चेतावनी नहीं दी, बल्कि चीन, अमेरिका, रूस और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के देशों को भी यह संकेत दिया कि भारत अब एक 'रिएक्टिव पावर' नहीं बल्कि 'प्रोएक्टिव सिक्योरिटी पावर' बनना चाहता है। भारत यह दिखाना चाहता है कि वह केवल अपने क्षेत्र की सुरक्षा ही नहीं, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने में सक्षम शक्ति है।

यह संदेश खासतौर पर चीन के लिए महत्वपूर्ण था। चीन पिछले कुछ वर्षों से हिंद महासागर में अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है। पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट, श्रीलंका के हम्बनटोटा पोर्ट और हिंद महासागर में चीनी नौसेना की बढ़ती गतिविधियाँ भारत के लिए चिंता का विषय हैं। ऐसे में ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत का सैन्य आधुनिकीकरण केवल पाकिस्तान के खिलाफ नहीं, बल्कि एशिया में शक्ति संतुलन बनाए रखने की बड़ी रणनीति का हिस्सा भी माना जा रहा है।

भारत ने इस ऑपरेशन के जरिए अमेरिका और पश्चिमी देशों को भी यह संदेश दिया कि वह आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति अपनाएगा। पिछले कुछ वर्षों में भारत, अमेरिका, फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ अपने रक्षा संबंध मजबूत कर चुका है। क्वाड जैसे मंचों पर भारत की भूमिका बढ़ी है। ऐसे में ऑपरेशन सिंदूर ने यह भी दिखाया कि भारत केवल आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि एक उभरती हुई सैन्य शक्ति भी बनना चाहता है।

हालाँकि इन सब बदलावों के बावजूद भारत की रक्षा व्यवस्था में कई बड़ी चुनौतियाँ अभी बाकी हैं। सबसे बड़ी समस्या है इंटीग्रेटेड थिएटर कमांड का न बन पाना। अमेरिका और चीन जैसे देशों में सेना, वायु सेना और नौसेना एक संयुक्त कमांड के तहत काम करती हैं। लेकिन भारत में अभी भी तीनों सेनाओं के बीच पूरा तालमेल नहीं बन पाया है। युद्ध के समय तेज निर्णय और संयुक्त कार्रवाई के लिए थिएटर कमांड बहुत जरूरी मानी जाती है। इसी तरह भारत अभी तक इंटीग्रेटेड रॉकेट फोर्स यानी आईआरएफ भी नहीं बना पाया है। चीन के पास पहले से शक्तिशाली रॉकेट फोर्स है और पाकिस्तान ने भी अपना रॉकेट कमांड तैयार कर लिया है। भविष्य के युद्धों में लंबी दूरी की मिसाइलें, प्रिसिजन स्ट्राइक और रॉकेट सिस्टम निर्णायक भूमिका निभाएँगे। इसलिए भारत के लिए भी ऐसी संयुक्त रॉकेट फोर्स बनाना समय की जरूरत बन चुका है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की रक्षा नीति में एक और बड़ा बदलाव यह देखने को मिला कि देश की रणनीति फिर से महाद्वीपीय सुरक्षा यानी जमीन आधारित खतरों की ओर ज्यादा झुक गई है। इसका असर नौसेना की कुछ बड़ी योजनाओं पर भी पड़ सकता है। जबकि चीन की बढ़ती समुद्री ताकत को देखते हुए भारत के लिए हिंद महासागर में मजबूत नौसैनिक उपस्थिति बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है। आने वाले वर्षों में भारत को जमीन और समुद्री सुरक्षा के बीच संतुलन बनाना होगा। अगर व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य अभियान नहीं था। यह भारत की नई राष्ट्रीय सुरक्षा सोच, उसकी राजनीतिक इच्छाशक्ति और बदलते भू-राजनीतिक आत्मविश्वास का प्रतीक बन गया। भारत अब केवल अपनी सीमाओं की रक्षा करने वाला देश नहीं रहना चाहता, बल्कि वह एशिया की शक्ति राजनीति में एक निर्णायक भूमिका निभाने की तैयारी कर रहा है।

कुल मिलाकर, ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की रक्षा नीति में एक नए दौर की शुरुआत की है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि भारत अब भविष्य के युद्धों के लिए खुद को तेजी से बदलना चाहता है। लेकिन असली सफलता तभी मिलेगी जब भारत केवल नए हथियार खरीदने तक सीमित न रहे, बल्कि अपनी सैन्य संरचना, निर्णय प्रणाली, तकनीकी क्षमता और तीनों सेनाओं के बीच तालमेल को भी पूरी तरह आधुनिक बनाए। आने वाले दशक में यही तय करेगा कि भारत केवल क्षेत्रीय शक्ति बनता है या वास्तव में एक वैश्विक सामरिक शक्ति के रूप में उभरता है।

कोई तो दे जवाब, देश क्या है, कौन है?

अभिव्यक्ति

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

क्या देश सिर्फ़ दुकान है कि जब चाहे खोल दी, जब चाहे बंद कर दी? क्या देश किसी की जायजाद है कि जब चाहे ख़रीद ली, जब चाहे बेच दी, जब मन आये सो किराये पर उठा दी? देश नौकरी भी नहीं है कि करके छोड़ दी, छुट्टी पा ली। देश दिल नहीं है कि लुट गया। दिल्ली भी नहीं है कि लूट ली। दिल्लगी भी नहीं है कि जब चाहे सो कर ली। देश कबसे अपना है ? क्या देश कोई सपना है? क्या देश केवल तपना है, खपना है? क्या देश कोई काबा है, कलीसा है, चर्च है या केवल जीवन का मनमाना खर्च है? क्या देश गाली-गलौज है, भ्रष्ट नेताओं की मौज है?

क्या देश कोई मुल्ला है, पादरी है, संत है? आखिर देश किसकी सलामती है और किसका अंत है? देश पर किसका दावा है, वह किसकी दलील है? देश किसके हुक्म की तामील है? देश किसका वकील हैं? क्या देश सिर्फ़ मंदिर है? क्या देश सिर्फ़ मस्जिद है? आखिर देश किसकी जिद है? देश किसका जरिया है, किसकी मुराद है? देश कबसे आबाद है और क्यों बरबाद है? क्या देश बेबस लोगों का मौन है? आखिर देश क्या है और कौन है?

आखिर देश क्या है? क्या नदी की हिलोर है, लोगों का शोर है या कोई सीनाजोर है? क्या सागर की पछाड़ है, बाघ की दहाड़ है या कोई ऊँचा पहाड़ है? स्वर है, ताल है, लय है या कोई भय है? क्या देश कोई राग है या सिर्फ़ भागमभाग है? क्या वह हड़कम्प है, हड़ताल है? भूकम्प है, तूफ़ान है, बाढ़ है, अकाल है? क्या देश सिर्फ़ महंगी दाल है? क्या देश माया है, ममता है, मन का मलाल है? देश किसका धर्म है,देश किसका मर्म है, देश किसका कर्म है, देश किसकी शर्म है? क्या देश जनता का बल है या केवल राजनीतिक छल है? क्या देश जीवन की आस है या राजनीतिक दलों की बकवास है?

क्या देश कोई जन-क्रन्दन है या केवल स्वार्थ का राजनीतिक गठबंधन है? क्या देश आपस की फूट है और केवल जनमत की लूट है? क्या देश कोई बंदर हैं, भालू है , मदारी है, जो गांठ ले उसकी सवारी है? क्या देश कोई पालतू हाथी है, घोड़ा है, कोई अंकुश और कोड़ा है या धरती की छाती पर पका हुआ फोड़ा है? क्या देश कोई खिला हुआ फूल है या सीने में रोज चुभता कोई शूल है? देश आखिर किसके हिस्से का कोटा है? देश किसका मन है जो खोटा है? क्या देश केवल राजबिहार है? क्या देश कोई लड़खड़ाती सरकार है? क्या देश केवल राजनीतिक यथार्थ है या कोई परमार्थ है?

क्या देश सिर्फ़ सुख है या अनंत व्याधि है? समय है, सदी है, काल है या कोई भ्रमजाल है? क्या देश सिर्फ़ कुदरत का कमाल है? आचार है, विचार है या सिर्फ़ चुनाव प्रचार है? क्या देश कोई बक-बक है, झुमाझटकी है? देश में किसकी साँस कहाँ अटकी है? देश किसका पुण्य है, किसका पाप है या केवल प्रलाप है? क्या वह सबका सिरजनहार है? क्या वह सबका पालनहार है या केवल संहार है? देश किसके बागों की बहार है, वह किससे दुश्मनी है और किससे प्यार है?

क्या देश सिर्फ़ हिन्दू है? क्या वह सिर्फ़ मुसलमान है या सबके जीवन की तान है? देश किसका मकान है, किसकी दूकान है,क्या वह केवल लूट का सामान है? क्या देश जीवन की जीत है या जीवन की हार है? आखिर देश किसकी पुकार है? क्या वह देव है, दानव है या सिर्फ़ मानव है? पशु है, पक्षी है, फूल है, फल है या सिर्फ़ कूड़ा-करकट है, कोई मरघट है? क्या देश जीवन का मेला है? क्या कोई किसी के साथ नहीं, हर कोई अकेला है? क्या देश बहता पानी है या किनारों पर ठहरी कोई पुरानी कहानी है? कौन है पूत और कौन है कपूत? आखिर क्या है देश-भक्ति का सबूत?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सड़कों पर कुत्तों की बादशाहत!

व्यंग्य

आसिम अनमोल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पिछले दिनों सरकार कुत्तों के लिए सख़्त हो गई। आवारा कुत्तों को पकड़ने के लिए सैकड़ों कर्मचारियों को आदेश दे डाले गए । आवारा कुत्ते पकड़ के लाओ। एक नहीं छूटना चाहिए। कर्मचारियों के होश उड़ गए। उनके दिमाग का पारा गरम हो गया। इन कुत्तों की पी टी उषा माफ़िक स्पीड को कंट्रोल कैसे किया जाएगा। यह सुनकर कुत्तों को पकड़ने का जारी किया गया आदेश घबरा गया । आवारा कुत्तों की लाइफ भी देश की राजनीति से कम नहीं होती। जैसे राजनीति चारों दिशाओं में अपने सम्बोधन के सहारे देश की चारों दिशाओं में भागमभाग करती रहती है वैसे ही कुत्तों का मानव जाति पर गली कूचो में किए जा रहे जानलेवा हमले भी जोरदार भ्रमण करते हुए नजर आ रहे हैं। सरकारी पाबंदियां इन पर रुआब दिखाकर इनको कैसे पकड़ में ले पाएँगी। यह सवाल भी पूरे देश में कुत्तों की तरह मारा मारा फिर रहा है। इधर कर्मचारियों की भी जान आफ़त में है । रोजाना नगर निकाय में रिपोर्ट पेश करने का प्रेशर अलग। कर्मचारियों को खुद के परिवार के बारे में कम कुत्तों के बारे में ज़्यादा चिंतन करना पड़ रहा है। कर्मचारियों की इतनी मनः स्थिति खराब है कि रात को नींद में कुत्तों के स्वप्न से पत्नियाँ परेशान हैं। सुबह की गुड मॉर्निंग दरवाज़े से गुज़र रहे मोहल्ले के कुत्तों से हो रही है। मेरे मोहल्ले में एक रोज नगर निगम की गाड़ी मय कर्मचारियों के पधारी। गाड़ी आगे आगे कुत्ते पूछ हिलाते हुए पीछे पीछे भाग रहे थे। ऐसा लग रहा था कि गाड़ी क कुत्तों को पकड़ने नहीं बल्कि कुत्ते नगर निगम की गाड़ी को पकड़ने के लिए रफ़्तार से भाग रहे हों। हमारे देश में पकड़ने की पकड़ हर स्तर पर बहुत कमजोर है। किसी चोर का गिरेवां धोके से पकड़कर दिखा दो। छुड़वाने वाले मय पनसैले लेकर सैकड़ों जमा हो जाएंगे समाज सेवक बनकर। पकड़ तो काले धन की भी नहीं हो पाई थी। वो भी पूरे देश में कुत्तों की तरह मारा मारा फिरा था। कर्मचारी कुत्तों को लेकर बहुत परेशान हैं। कुत्ते बिलकुल नहीं परेशान हैं। वो उछल कूद करके खुश हो रहे हैं। तुम अपना जाल तैयार रखो। हम उछल उछलकर गली कूचों में भागने का प्रयास कर लेंगे। हम तुमको दिखेंगे ही नहीं। हम चुपके से घरों में घुस जाएंगे। पलंग के नीचे जाकर सो जाएंगे। जब तुमको हम दिखेंगे ही नहीं तो तुम हमको कैसे पकड़ पाओगे। जब तुम थक हार मानकर अपने नगर निगम के मय आदेश के उदास होकर चले जाओगे। फिर हम सीना तानकर सड़कों पर बादशाहत करने आ जाएंगे। इंसानों के सपने तो जीवन में कभी न कभी पूरे हो ही जाते हैं। इधर कुत्तों को पकड़ने का सपना सरकार का आदेश बनकर सड़कों पर मारा मारा फिर रहा है। उधर कुत्तों के द्वारा इस सपने को ध्वस्त करने की योजना कर्मचारियों के हौसलों पर वार कर रही है।

कानून और न्याय

पश्चिम बंगाल चुनाव

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

मुख्यमंत्री और राज्यपाल के संवैधानिक अधिकार

मुख्यमंत्री का कार्यकाल निश्चित नहीं होता है। वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है। राज्यपाल द्वारा उसे तब तक बर्खास्त नहीं किया जा सकता, जब तक कि विधानसभा में बहुमत प्राप्त होता है। यदि वह विधानसभा में विश्वास मत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिये। अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है। संविधान का अनुच्छेद 164 राज्य के मंत्रिपरिषद के गठन और इसमें राज्यपाल की शक्तियों से जुड़ा हुआ है। हर चुनाव के बाद राज्यपाल विधानसभा में दलों की संख्या का आकलन करते हैं और बहुमत वाली पार्टी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के अपने पद से इस्तीफा न देने का उनका बयान चर्चाओं में रही। उनके इस बयान पर बीजेपी से लेकर विपक्षी दलों के नेताओं ने अपनी राय जाहिर की है। विधानसभा चुनावों में करारी हार के बाद मंगलवार को ममता बनर्जी ने पहली बार प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। इस दौरान उन्होंने बीजेपी के साथ चुनाव आयोग पर पश्चिम बंगाल में चुनाव को जबरन अपने पक्ष में करने का आरोप लगाया। अब राज्यपाल द्वारा ममता सरकार और मंत्रिमंडल को बर्खास्त कर दिया गया है तथा सुवेन्दु अधिकारी को नया मुख्यमंत्री चुन लिया गया है। ममता कुछ भी कहे, लेकिन इस संबंध में हमें कानूनी प्रक्रिया को समझना होगा। यह भी देखना होगा कि सरकार क्या कदम उठाती है? चुनाव संपन्न हो चुके हैं और नतीजे घोषित किए जा चुके हैं। अब सवाल यह है कि चुनाव को चुनौती कैसे दी जाएगी? विचारणीय प्रश्न यह है कि किसी मुख्यमंत्री का यह कहना कि वह इस्तीफा नहीं देंगी, क्या कानूनी रूप से सही है? यह भी विचारणीय प्रश्न है कि क्या ऐसी स्थिति में भी वे मुख्यमंत्री रहेंगी? हमारे लिए इस संबंध में यह जानना आवश्यक है कि इस संबंध में भारतीय संविधान आखिर क्या कहता है?

इस संबंध में भारत के संविधान का भाग 6 अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। इसमें अनुच्छेद 152 से लेकर अनुच्छेद 236 तक शामिल है। इन अनुच्छेदों में राज्य के शासन की प्रक्रियाएं भी शामिल है। इन्हीं में से कुछ अनुच्छेद मंत्री परिषद एवं मुख्यमंत्रियों से जुड़े हैं। अनुच्छेद 163 और 164 के प्रावधान महत्वपूर्ण है। राज्यपाल को अपने कार्यों का प्रयोग करने में सहायता और सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होगी। इसका प्रधान, मुख्यमंत्री रहेगा। हारे हुए मुख्यमंत्री को इस्तीफा देना चाहिए। संवैधानिक ढांचा बहुमत खो देने पर प्रभावी रूप से यही अनिवार्य करता है। संवैधानिक परंपराएं केवल राजनीतिक शिष्टाचार नहीं है। न्यायालय लोकतांत्रिक शासन की व्याख्या करते समय अक्सर इन्हें मान्यता देते हैं। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने लगातार यह माना है कि विधायिका में बहुमत संसदीय लोकतंत्र की आधारशिला है। कार्यपालिका की वैधता पूरी तरह से निर्वाचित सदन के विश्वास पर निर्भर करती है। यह सिद्धांत एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ मामले में ऐतिहासिक फैसले के माध्यम से दृढ़ता से स्थापित हुआ।

संविधान के अनुच्छेद 164 के तहत, मुख्यमंत्री राज्यपाल की इच्छा पर पद धारण करते हैं। यदि कोई मुख्यमंत्री चुनाव हार जाता है या बहुमत खो देता है और फिर भी इस्तीफा देने से इंकार करता है, तो राज्यपाल को उन्हें पद से हटाने का अधिकार है। संवैधानिक मानदंडों का पालन सुनिश्चित करते हुए, मौजूदा सरकार को हटाने के लिए औपचारिक आदेश जारी किया जा सकता है।

स्थापित परंपराओं के अनुसार, राज्यपाल सरकार के बहुमत की जांच के लिए विधानसभा का विषेष सत्र भी बुला सकते हैं। वर्तमान संख्या को देखते हुए, ममता बनर्जी के लिए बहुमत साबित करना असंभव होगा। ऐसे में सदन में उपस्थित न होने पर मुख्यमंत्री को पद छोड़ना पड़ेगा। राज्यपाल सरकार को निर्धारित समय सीमा के भीतर न्यूनतम मतदान के माध्यम से बहुमत साबित करने का निर्देश दे सकता है। इसका पालन न करने पर संवैधानिक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने न्यूनतम मतदान से बचने को बार-बार संदेह की दृष्टि से देखा हे।

यदि संवैधानिक गतिरोध बना रहता है, तो इसे संवैधानिक तंत्र की विफलता माना जा सकता है। ऐसे मामलों में, राज्यपाल अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकते हैं। एक बार लागू होने पर, शासन केंद्र के हाथों में चला जाता है, जिससे मुख्यमंत्री का अधिकार प्रभावी रूप से समाप्त हो जाता है। अनुच्छेद 356 के तहत, राष्ट्रपति शासन असाधारण परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है यदि संवैधानिक तंत्र विफल हो जाए या कोई स्थिर सरकार गठित न हो सके। हालांकि, बोम्मई फैसले के बाद, अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग पर काफी हद तक रोक लग गई। आज, राष्ट्रपति शासन को संवैधानिक रूप से अंतिम उपाय माना जाता है, न कि राजनीतिक शॉर्टकट। राज्यपाल को अनुच्छेद 356 के तहत अपनी शक्ति का प्रयोग करने से पहले आमतौर पर सरकार गठन, गठबंधन निर्माण या सदन की बैठक की सभी संभावनाओं को समाप्त करना आवश्यक है।

अनुच्छेद 164 मंत्रियों के बारे में अन्य उपबंध भी महत्वपूर्ण है। संविधान में वर्णित प्रावधानों के अनुसार मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करेगा और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति राज्यपाल, मुख्यमंत्री की सलाह पर करेगा तथा मंत्री, राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद धारण करेंगे। उपरोक्त विधिक स्थिति के अलावा मुख्यमंत्री की नियुक्ति के प्रावधान भी महत्वपूर्ण है। संविधान के अनुच्छेद 164 यह प्रावधान करता है कि मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करेगा। साथ ही राज्यपाल द्वारा विधानसभा चुनावों में पार्टी के एक बहुमत प्राप्त नेता को राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त किया जाता है। राज्यपाल के पास नाममात्र का कार्यकारी अधिकार है, लेकिन वास्तविक कार्यकारी अधिकार मुख्यमंत्री के पास है। हालांकि राज्यपाल द्वारा प्राप्त विवेकाधीन शक्तियाँ राज्य प्रशासन में मुख्यमंत्री की शक्ति, अधिकार, प्रभाव, प्रतिष्ठा और भूमिका को कुछ हद तक कम कर देती हैं। एक व्यक्ति जो राज्य विधानसभा का सदस्य नहीं है, उसे छह महीने के लिये मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त किया जा सकता है। उस समय सीमा के भीतर उसे राज्य विधानसभा की सदस्यता ग्रहण करनी होगी, ऐसा न करने पर उसे मुख्यमंत्री पद का त्याग करना होता है।

मुख्यमंत्री का कार्यकाल निश्चित नहीं होता है और वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है। राज्यपाल द्वारा उसे तब तक बर्खास्त नहीं किया जा सकता, जब तक कि विधानसभा में बहुमत प्राप्त होता है। यदि वह विधानसभा में विष्वास मत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिये अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है। संविधान का अनुच्छेद 164 राज्य के मंत्रिपरिषद के गठन और इसमें राज्यपाल की शक्तियों से जुड़ा हुआ है। हर चुनाव के बाद राज्यपाल विधानसभा में दलों की संख्या का आकलन करते हैं और बहुमत वाली पार्टी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं। इसके बाद शपथ ग्रहण होता है। अगर कोई मंत्री उस सदन का सदस्य नहीं है तो उसे छह महीने के अंदर सदन की सदस्यता लेनी होती है। अगर छह महीने तक सदन की सदस्यता हासिल नहीं की जाती है तो मंत्री या मुख्यमंत्री अपने पद पर नहीं रहेगा। संविधान का अनुच्छेद 164 (1) कहता है कि मुख्यमंत्री ''राज्यपाल की इच्छा तक'' पद पर बने रह सकते हैं। राज्यपाल की इच्छा दरअसल निर्वाचित प्रतिनिधियों (विधायकों) के बहुमत द्वारा किसी एक नेता पर जताए गए भरोसे से तय होती है।

हर चुनाव के बाद राज्यपाल विधानसभा में दलों की संख्या का आकलन करते हैं और बहुमत वाली पार्टी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं। अगर मौजूदा मुख्यमंत्री इस्तीफा नहीं देते, तो राज्यपाल अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए मंत्रिपरिषद को बर्खास्त कर सकते हैं, जिसका हिस्सा मुख्यमंत्री भी होते हैं। इसके अलावा भारतीय संविधान का अनुच्छेद 172 राज्य विधानमंडलों (विधानसभा और विधान परिषद) के कार्यकाल से जुड़ा हुआ है। इसके मुताबिक, उस विधानसभा का कार्यकाल पहली बैठक की तारीख से पांच वर्ष का होता है। पांच साल का वक्त पूरा होते ही यह खुद ब खुद भंग हो जाएगी। अनुच्छेद 172 कहता है कि हर राज्य की विधानसभा यदि पहले ही विघटित नहीं कर दी जाती है तो, अपने प्रथम अधिवेशन के लिए नियत तारीख से पांच वर्ष तक बनी रहेगी। पांच वर्ष की उक्त अवधि की समाप्ति का परिणाम विधानसभा का विघटन होगा। संविधान के अनुसार, पद पर बने रहने के मामले में मुख्यमंत्री राज्यपाल के डॉक्ट्रिन ऑफ प्लेजर (राज्यपाल की इच्छा का सिद्धांत) के तहत कार्य करते हैं।

पहले भी ऐसी स्थितियां रही हैं जब मुख्यमंत्री ने सदन में बहुमत खो दिया था। ऐसे मामलों में राज्यपाल ने किसी अन्य नेता को नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के लिए आमंत्रित किया है। इसलिए ऐसी स्थिति में राज्यपाल निश्चित रूप से अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए सबसे बड़ी निर्वाचित पार्टी के नेता को नई सरकार बनाने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। ऐसा नहीं लगता है कि ममता बनर्जी के पास नई सरकार के गठन का विरोध करने का कोई वैधानिक अधिकार है। ममता बनर्जी का बयान एक राजनीतिक बयान ज्यादा है। इसका उद्देश्य सहानुभूति हासिल करना है। यह कोई संवैधानिक कदम भी नहीं है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में, जब मुख्यमंत्री के पास विधानसभा में बहुमत होता है, तब राज्यपाल इस डॉक्ट्रिन ऑफ प्लेजर का इस्तेमाल नहीं कर सकते। वर्तमान परिवेश में ममता की पार्टी का सदन में बहुमत नहीं है। इसलिए ममता दीदी के बयान को गंभीरतापूर्वक लेने की आवश्यकता नहीं है। राज्यपाल अपने संवैधानिक अधिकारों के तहत बहुमत वाली पार्टी के नेता को मुख्यमंत्री के पद की शपथ हेतु आमंत्रित कर सकते हैं।

वो छत, गर्मी की रातें और यादों में बसी बातें

दिन भर मस्ती , खाना-पीना , धमाचौकड़ी में समय कहां बित जाता मालूम ही नहीं पड़ता और शाम हो जाती जिसका हमें बेसब्री से इंतजार रहता । हर रोज गच्ची कि झाड़ू बारी बारी से लगाई जाती । इस पर भी झगड़े होते , बड़े बच्चे कहते रोज रोज हम ही क्यों लगाये झाड़ू ,छोटे बच्चे भी तो सोते है ना ? फिर माँ आकर सबको बराबरी से काम बांटती । इसके बाद बाल्टियों में पानी लाकर छत पर पानी छिड़का जाता , दिनभर की तपन रफूचक्कर हो जाती और गच्ची शीतल जल से तरोताजा हो जाती ।ठंडी बयार चलने लगती और छत पर फैली रातरानी की बेल संपूर्ण वातावरण को सुरभित कर देती। गच्ची पर खाना खाने का आनंद ही अलग होता था । हर बच्चा कोई थाली तो कोई कटोरी गिलास ऊपर लेकर आता ।

श्रीति राशिनकर

गर्मी के दिन आते ही याद आती है घर के छत की ! छत या जिसे गच्ची कहा जाता था ,बचपन की ऐसी जगह जो हर बच्चे को अपनी सी लगती थी । आज जगह की कमी और शहरी संस्कृति ने गच्ची को बालकनी तक सिमटा दिया है । यह वो समय था जब गच्ची पर हम बेखौफ सोते थे , न किसी का डर होता था न किसी का खौफ । आज जब पुराने दिनों कि यादें ताजा करने की कोशिश करती हूँ तो जगजीतसिंह और चित्रासिंह की ग़ज़ल - हम तो है परदेस में , देश में निकला होगा चाँद याद जरूर आती है । बचपन में माँ की लोरी का चाँद हो या फिर दादी की कहानी का गोलमटोल सा हँसता चाँद व्यक्ति को जीवन भर याद रहता है । यह सच है की बचपन में देखा हुआ चाँद युवा और बुजुर्ग अवस्था के चाँद से बिलकुल अलग होता है क्योंकि वह हमारे कल्पना का चाँद होता है। वास्तविकता से बिलकुल अलग । यह नन्हा सा चाँद एक बड़ा आकर्षण होता था छत पर सोते समय । उन दिनों बड़ी लम्बी होती थी गर्मी की छुट्टियाँ , परीक्षा ख़त्म होने से पहले ही पूरी योजना बना ली जाती थी । मामा ,काका बुआ के बच्चें भी पास के गाँव से रहने आते थे और फिर शुरू होता था हमारा अपना ग्रीष्मकालीन शिविर !

दिन भर मस्ती , खाना-पीना , धमाचौकड़ी में समय कहां बित जाता मालूम ही नहीं पड़ता और शाम हो जाती जिसका हमें बेसब्री से इंतजार रहता । हर रोज गच्ची कि झाड़ू बारी बारी से लगाई जाती । इस पर भी झगडे होते , बड़े बच्चे कहते रोज रोज हम ही क्यों लगाये झाड़ू ,छोटे बच्चे भी तो सोते है ना ? फिर माँ आकर सबको बराबरी से काम बांटती । इसके बाद बाल्टियों में पानी लाकर छत पर पानी छिड़का जाता , दिनभर की तपन रफूचक्कर हो जाती और गच्ची शीतल जल से तरोताजा हो जाती ।ठंडी बयार चलने लगती और छत पर

फैली रातरानी की बेल संपूर्ण वातावरण को सुरभित कर देती। गच्ची पर खाना खाने का आनंद ही अलग होता था । हर बच्चा कोई थाली तो कोई कटोरी गिलास ऊपर लेकर आता । उपर खाना लाने की जिम्मेदारी माँ ही निभाती । मां कहती तुम लोग अभी छोटे हो खाना गिरा दोगे तो अन्न का नुकसान होगा , उस उम्र में माँ ने खेल खेल में अन्न का महत्व समझा दिया था जो आज भी जेहन में है । हंसी-ठिठोली के साथ कभी आम के रस के साथ न जाने कितनी पुड़ियाँ हम खा जाते ,तो कभी लौंजी ,पुदीने की खट्टी मीठी चटनी का स्वाद भोजन को स्वादिष्ट बनाता ।

खाने के बाद सभी बच्चे लम्बी दरी बिछाते उस पर गद्दियाँ और सफ़ेद झक चादरें बिछाई जाती। माँ और पिताजी चादरे बिछाने पर देखते की किसकी चादरों में कितनी सलवटे है , फिर सलवटे हटाकर उसे ठीक करना सिखाया जाता । गद्दियों पर बच्चे कतारबद्ध लेट जाते । आसमान की ओर नज़र जाते ही असंख्य तारों को हम अपनी आँखों में समाने कि कोशिश करते । फिर शुरू होता चांदनी को गिनने का खेल ! जहाँ से शुरू करते वहीँ आकर रुकने में ही सब उलझ जाते और गिनना अधुरा रह जाता , शायद तभी से तारे गिनने कि कहावत ऐसी ही शुरू हुई होगी । इसी बीच सप्तऋषि ,आकाश गंगा देखते देखते हम नींद के आगोश में समा जाते पर हां उनींदी आंखों से माँ को कहते रात को चार बजे हमें ध्रुव तारा देखने के लिए उठा देना ! दूसरे दिन मां बताती की कई कोशिशों के बावजूद हम गहरी नींद में सोते ही रहते। दूसरे दिन सब मिलकर खूब हँसते । आज बरसों बित गए है , चन्द्रमा और तारें तो सदियों से चले आ रहे है ,लेकिन बिना कूलर ,पंखे और एसी की गच्ची पर गहरी नींद का आनंद आज भी हमें खुशनूमा एहसास से भर देता है।

माँ ही लौटा सकती है पुनः आजाद और भगतसिंह

माँ तिरी सख्तियां तिरे ऊसूल सलामत रहे,
तिरी परवरिश पर किसी को न शिकायत रहे।।

मातृ दिवस

सीमा देवेन्द्र

लेखक साहित्यकार हैं।

समाज क्या चाहता है माँ से ? देश को क्या उम्मीद है माँ से ? और माँ भी कहीं ना कहीं यही चाहती होगी कि मेरे लालन पालन में कोई कसर बाक़ी ना रहे , कोई मुझ पर ऊँगली ना उठाए ।

ये चिंतन और विमर्श के विषय हैं लेकिन आधुनिकता सब पर भारी पड़ रही है । गिफ्ट लेन देन फोटो पार्टी ये सब आधुनिक चोंसलिए इस कदर बढ़ते जा रहे हैं कि मूल मुद्दे से सब दूर हैं ।

यदि देश को फिर से विवेकानंद आजाद भगतसिंह और शिवाजी चाहिए तो वह माँ ही है जो पुनः लौटा सकती है , अपने लाल को इस तरह तैयार कर सकती है ।

इसके लिए माँ का जागरूक होकर अपने व्यक्तित्व में सख्ती लाकर अपनी छाप छोड़ना बहुत जरूरी है ।

वर्ना माँ ममता की मूरत तो है ही । सुबह से शाम तक घर का काम करती है सबका ध्यान रखती । और फिर ये काम माँ ही तो करती है ये भी निश्चित है ।

मैं इससे किसी माँ का मूल्यांकन कम नही आँक रही , बल्कि इसे और ऊँचा दर्जा देने की बात कर रही हूँ जहाँ माँओं ने इतिहास रचे हैं ।

देखा जाय तो हर हालात माँ से होकर ही गुजरते हैं क्योंकि माँ ही परिवार की धुरी होती है । बालक के व्यक्तित्व निर्माण के मूल में माँ होती है । कहा भी गया है कि माँ ही बालक की प्रथम गुरू होती है । मातृत्व केवल जन्म देने की प्रक्रिया ही नही है बल्कि एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की दीर्घकालिक साधना है । बाल्यावस्था से ही बालक के सोच और व्यवहार को दिशा मिलना प्रारम्भ हो जाती है जो धीरे धीरे संस्कार बनते जाते हैं । यही शिक्षा बिना किसी पाठ्यक्रम के जीवन जीने की कला सिखाती है । आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में माँ की भूमिका और भी चुनौतीपूर्ण हो गई है । जो बच्चों की भावनात्मक सुरक्षा , नैतिक शिक्षा और मनसिक संतुलन का आधार है ।

दिवस कमजोरों के मनाए जाते हैं क्योंकि समाज के लिए ये एक आत्ममंथन का अवसर बनें ।

माँ का प्रभाव ही वह बीज है जिससे एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व और सुदृढ समाज विकसित होता है । इसलिए मातृत्व को सामाजिक और नीतिगत स्तर पर सशक्त होना बहुत ज़रूरी है । माँ का प्रभाव ही बालक के जीवन को आकार देता है । यदि हम हमारी पीढ़ी से पहले वाली पढ़ी वाली माँ की बात करें तब वह माँ बहुत ही सीधी सरल और ज्यादातर निरक्षर होती थी लेकिन उनका प्रभाव - संस्कार और सच्चाई की पैरवी करता नजर आता था ।

जहां तक गुणों की बात करें तो वह हर युग की माँ में समान ही होते है । ममता , दया , करूणा , त्याग और समर्पण के साथ प्रेम की प्रतिमूर्ति होना , और जिसमें ये सब गुण होते हैं वही तो माँ होती है । लेकिन बालक जब इन गुणों का दुरुपयोग करने में समझने लगे तब सख्त होने की आवश्यकता होती है जो अतिआवश्यक है । ये सख्तियाँ आयी भी हमारी पीढ़ी वाली माँओं में । हाँलाकि इतिहास पलटकर देखें तो ऐसी माँओं का वर्णन हमें पढ़ने को मिलता है जहाँ माँ ने अपने मातृत्व वाले गुणों को हृदय में दबाकर उनको देश और समाज हित में सदैव न्याय और सच्चाई के पथ पर न्यौछावर किए हैं ।

बात करें तो हर युग में ये भी देखा गया है , कई बार बाहरी माहौल बाहरी ताक़तें इतनी सशक्त होती है कि माँ के दिए संस्कार कमजोर पड़ने लगते हैं जो कि आज के हालात से स्पष्ट हो रहे हैं । महानगरों में संस्कारित परिवार की युवतियाँ अपने मातृत्व को एक तरफ रख अपने माता पिता को शर्मसार कर रही है । इस आचरण से वे अपने बच्चों पर क्या प्रभाव छोड़ेगीं उन्हे खुद नही पता । जो हमारे सभ्य समाज के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है ।

जहाँ समाज की संरचना संयुक्त परिवार पर आधारित है वहीं इस तरह की महिलाएँ अपने बच्चों को वो कीमती समय नही दे रही जो उन्हें देना चाहिए क्योंकि उन्हें अपनी अनैतिक दिनचर्या से ही फुर्सत नही (कड़वा है मगर सत्य है) । ऐसी स्थिति में उन नौनिहालों का भविष्य चिंतनीय है जिसका भुगतान भी पीढ़ीयां करेंगी ।

आजकल वैसे ही स्क्रीन की चमक ने कई रिश्तों को धुँधला कर दिया है । लेकिन वही समय होता है वही अवसर होता है जहां मानवता अपनी छाप छोड़ती है ।

हर युग में माँ की सख्ती प्रथम है । माँ अपने अनुभवों से परिस्थितयों से संवेदना और संस्कार की नई परिभाषा गढ़ सकती है । वह उस पीढ़ी की सृजक है जो राष्ट्र के भविष्य को आकार देती है ।

माँ एक जिम्मेदारी है । जहां ममता लाड़ प्यार जरूरी है एक सीमा तक वहीं सख्तियाँ और अनुशासन वाली जागरूकता भी कहीं अधिक जरूरी है । यही प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास को निर्देशित कर उसे स्वाभाविक रूप से जीवन जीने की प्रेरणा बनता है । माँ का प्रभाव पीढ़ियों तक गूँजता है । जागरूक माँ एक बेहतर समाज और राष्ट्र की पहली शिल्पकार होती है ।

लालबाग परिसर में वरिष्ठजनों ने मनाया गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर जन्मोत्सव, विचार गोष्ठी आयोजित

धार । विश्वविख्यात साहित्यकार, नोबेल पुरस्कार विजेता एवं महान चिंतक गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की जयंती के अवसर पर लालबाग परिसर में पेंशनर परिवार एवं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में श्रद्धा एवं गरिमामय वातावरण में जन्मोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। इसके पश्चात उपस्थित वरिष्ठजनों के बीच मिठाई वितरण किया गया।

इस अवसर पर जिला शिक्षक सम्मान समारोह समिति अध्यक्ष नारायण कुबेर जोशी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस विचार मंच से सुरेंद्र कुमार तथा पेंशनर परिवार के गोकुल सोनी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरुदेव टैगोर के साहित्य, शिक्षा, राष्ट्रभक्ति एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि टैगोर जी का जीवन समाज के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। कार्यक्रम में वरिष्ठ सदस्य महेशचंद्र महेश्वरी, कैलाश मधुकर कुंते, कपिल सोलंकी, कैलाशचंद्र मालवीय, बैरागीजी, इस्के, शंकरलाल जाट, आनंदीलाल वर्मा, अशोक कुलकर्णी, बाबूलाल जी गोयल, ओमप्रकाश वर्मा, दिनेश तिवारी, गजेन्द्र सिंह राठौर, मनमोहन जोशी, मगन सिंह चौहान, सीताराम राठौर, अथर्व सहित अनेक वरिष्ठजनों ने पुष्प अर्पित कर गुरुदेव को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के अंत में किशोरीलाल डांगी ने सभी उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में साहित्य, संस्कृति एवं राष्ट्रभावना से ओतप्रोत वातावरण देखने को मिला, कार्यक्रम की जानकारी जिला शिक्षा सम्मान समारोह के अध्यक्ष नारायण जोशी पराग स्वीट्स द्वारा दी गई।

जिला शिक्षक सम्मान समारोह समिति के अध्यक्ष नारायण कुबेर जोशी प्रेरणादायी उद्यमी के रूप में सम्मानित

धार। लघु उद्योग भारती ने अपने 33 वे स्थापना दिवस के अवसर पर आनंदम रिसॉर्ट में उद्यमियों का सम्मान समारोह आयोजित किया । जिला शिक्षक सम्मान समारोह समिति के अध्यक्ष नारायण कुबेर जोशी को समाजसेवी व प्रेरणादायी उद्यमी होने पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर व्यापारीगण व गणमान्य नागरिक, वरिष्ठजन उपस्थित रहे । लघु उद्योग भारती के इस आयोजन व सम्मान पर जोशी ने लघु उद्योग भारती का आभार व्यक्त किया।

25 शिकायतों में सोहागपुर पुलिस ने 22 मोबाइल ढूंढकर वापस दिए

सोहागपुर । यदि पुलिस ठान ले तो किसी अपराधी को खोजना मुश्किल काम नहीं है। ऐसा ही सोहागपुर पुलिस के पुलिस अधिकारियों एवं पुलिसकर्मियों कर दिखाया है। सोहागपुर थाने में पिछले 5 महीने में 25 मोबाइल गुम होने की सूचना पुलिस थाने में दी गई थी। जिसमें मोबाइल गुमने की सूचना सीईआईआर संचार विभाग से भी की गई थी। जिसमें अभी तक 22 मोबाइल पुलिस ने जिसकी कीमत लगभग तीन लाख रुपये के शिकायतकर्ता को पोर्टल के माध्यम से ढूंढकर वापिस प्रदान किए हैं। सोहागपुर पुलिस ने नागरिकों से आग्रह किया है कि मोबाइल गुमने की सूचना संचार विभाग के सीईआईआर पोर्टल पर आवश्यक रूप से करें। मोबाइल गुमने की सूचना थाना पर देते हुए समय मोबाइल का बिल,आधार कार्ड, आईएमईआई नंबर, मोबाइल की कंपनी का उल्लेख आवश्यक रूप से करें।

चार्जिंग आटो जलकर राख – समीपवर्ती ग्राम श्रीरंगपुर में मुकेश पिता स्वर्गीय किशोरी लाल टेकाम निवासी ग्राम श्रीरंगपुर (टेकापार) के चार्जिंग आटो जलकर राख हो जाने के समाचार हैं । इस आशय की सूचना सोहागपुर पुलिस थाने में दर्ज कराई कि यह ऑटो चलाने का काम करता है ।करीब डेढ़ वर्ष से किराए से ऑटो चला रहा हूं।फरवरी 2026 में4,लाख 10हजार रूपये में नया टेरा कंपनी का ऑटो एमपी 05 जेड के 6960 खरीदा था। जिसे श्रीरंगपुर से सोहागपुर चलाया करता था। 8 मई26 को रात्रि 12 बजे घर जाकर ऑटो को चार्ज में लगाकर सो गया था । रात करीबन 1ः30 बजे देखा तो ऑटो में आग लगी हुई थी। आसपास के लोगों की सहायता से आटो की आग बुझाई । आग कैसे लगी जानकारी नहीं है। ऑटो पूरा जलाकर राख हो गया है। पुलिस ने आगजनी का प्रकरण दर्ज करके जांच कर रही है।

सुरक्षा बरतें –आजकल गर्मी का तापमान निरंतर बढ़ रहा है।ऐसे में बेट्री चार्जिंग वाले आटो एवं दो पहिया वाहनों की सुरक्षा करें। बेट्री चार्जिंग पर लगाने के बाद यह देखें कि उसका अधिक चार्जिंग तो नहीं हुआ है। यदि ऐसा हुआ है।तो निश्चित ही बेट्री से हादसे होने की संभावना बढ़ जाती है।

महिला ने खाया जहर, अस्पताल में मौत

बैतूल। आमला शहर के वार्ड नंबर-1 में एक महिला ने सल्फास खाकर आत्महत्या कर ली। प्रारंभिक जांच में पति-पत्नी के बीच विवाद और आर्थिक तंगी को आत्महत्या का कारण बताया जा रहा है। आमला थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है, घटना शनिवार रात की है। मृतका की पहचान वार्ड नंबर-1 निवासी नीलू नागले (30) पत्नी विजय नागले के रूप में हुई है। बताया गया है कि शनिवार रात नीलू ने अपने घर में जहरीले पदार्थ सल्फास का सेवन कर लिया, जिसके बाद देर रात उसकी तबीयत बिगड़ गई और उसकी मौत हो गई। सूत्रों के अनुसार, महिला के सिरहाने से सल्फास की एक डिब्बी भी मिली है। घटना की सूचना मिलते ही आमला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भिजवाया। थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर ने बताया कि मृतका बर्तन मांजने का काम करती थी और अक्सर देर से घर लौटती थी। इसी बात को लेकर पति-पत्नी के बीच अक्सर विवाद होता था।

छोटे कार्यकर्ताओं का सम्मान ही भाजपा की असली ताकत:हेमंत खंडेलवाल

बैतूल। राजनीति में अक्सर बड़े मंच और बड़ी भीड़ दिखाई देती है, लेकिन कुछ पल ऐसे भी होते हैं जो सीधे लोगों के दिलों को छू जाते हैं। ऐसा ही भावुक और आत्मीय दृश्य उस समय देखने को मिला, जब भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल अचानक भाजपा के जमीनी कार्यकर्ता राजू सोनकपुरिया के घर पहुंचे। एक छोटे से कार्यकर्ता के घर प्रदेश अध्यक्ष का पहुंचना औपचारिक मुलाकात नहीं थी, यह उस आत्मीय रिश्ते की मिसाल थी, जहां संगठन अपने समर्पित कार्यकर्ताओं को परिवार मानता है। तिलक वार्ड निवासी राजू सोनकपुरिया पान व्यवसाय से अपना जीवनयापन करते हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने हमेशा पार्टी को प्राथमिकता दी और हर कार्यक्रम, हर अभियान में पूरी निष्ठा से सक्रिय रहे। हाल ही में उन्हें एल्डरमैन बनाए जाने के बाद यह मुलाकात उनके लिए किसी सम्मान से कम नहीं रही। जैसे ही श्री खंडेलवाल उनके निवास पहुंचे, सोनकपुरिया परिवार की खुशी देखते ही बन रही थी। परिवार के सदस्य भावुक हो उठे। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने घर के अंदर आते ही बोले क्या हाल है राजू ,परिवार कैसा है, बच्चे क्या कर रहे है इन शब्दों में इतना अपनापन था कि परिवार के सदस्य भावुक हो गए। उन्होंने परिवार के सदस्यों भी आत्मीय चर्चा की। लोगों का कहना है कि यही सरलता और कार्यकर्ताओं के प्रति सम्मान हेमंत खंडेलवाल को अन्य नेताओं से अलग बनाता है। बड़े पद पर पहुंचने के बाद भी उनका जमीनी कार्यकर्ताओं से जुड़ाव लगातार बना हुआ है। राजनीति में जहां अक्सर छोटे कार्यकर्ता खुद को उपेक्षित महसूस करते हैं, वहीं इस तरह की मुलाकातें यह संदेश देती हैं कि संगठन की असली ताकत वही कार्यकर्ता हैं, जो बिना किसी स्वार्थ के वर्षों तक पार्टी का झंडा उठाए रहते हैं। राजू सोनकपुरिया तीस साल से भाजपा पार्टी से जुड़े है और पिछले नगर पालिका चुनाव में पार्षद का चुनाव लड़े थे और दो वोट से चुनाव हार गए थे। पार्टी ने उनके समर्पण और निष्ठा को देखते हुए उन्हें बैतूल नगर पालिका में एल्डरमैन नियुक्त किया है।

विचारधारा के प्रति निष्ठा हमारे संगठन की पहचान : खंडेलवाल

जिले की कामकाजी बैठक संपन्न

बैतूल। जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित कामकाजी बैठक को संबोधित करते भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि हमारी कामकाजी और कोर समिति की बैठके 100 प्रतिशत पूरी हुई है। हमारी पार्टी लगातार कार्य करने वाले राजनीतिक दल के रूप में पहचानी जाती

है। हमारे कार्यकर्ता अपनी विचारधारा और कार्य पद्धति के प्रति निष्ठा से सिखते हुए काम करते है। समय समय पर कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण निरंतर सुधार की दृष्टि से होता है जो निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। संगठन की सफलता से कार्यकर्ताओं का सम्मान बढता है सतत संपर्क और संवाद के साथ पार्टी को समय देना पार्टी के सम्मान के लिए जरूरी है। प्रदेश संगठन ने अपने कलेन्डर में हर माह बैठको का टाईम टेबल तय किया है। समय के साथ पूरी मजबूती से एक परिवार की तरह हम सक्रियता के साथ सशक्त हो ऐसा प्रयास सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओ को करना चाहिए। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश उपाध्यक्ष एवं संभाग संगठन प्रभारी कांतदेव सिंह ने कहा कि बैतूल जिले में जिस तरह से समन्वय के साथ संगठन कार्य कर रहा है। वह अन्य जिलो के लिए भी प्रेरणा का कार्य करता है। मंडलो की बैठक समय पर हो रही है। इनकी व्यवस्थित रिपोर्टिंग और कार्यकर्ताओं की निष्ठा से पिछले कार्यक्रम सफल हुए है। आने वाले दिनो में होने वाले प्रशिक्षण वर्ग में संख्या अनुशासन और 100 प्रतिशत उपलब्धता से हम संगठन की आशाओ पर खरे उतरेगें। इस अवसर पर बैठक को संबोधित करते हुए जिला संगठन प्रभारी सुदर्शन गुप्ता ने कहा कि जिले के 30 मंडलो में प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हुए है। अब जिले का प्रशिक्षण वर्ग होना है इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण वर्ग में अपेक्षित श्रेणी के हर कार्यकर्ता और पदाधिकारी को पूरे समय वर्ग में निष्ठा के साथ उपस्थित रहना है। वर्ग के उदघाटन से लेकर समापन तक सर्व व्यापी, सर्व समावेशी और सर्व स्पर्शी अनुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण हमें प्रस्तुत करना है।

बेटे ने पिता की पत्थर मारकर हत्या की, गिरफ्तार

शराब के लिए पैसे नहीं देने पर हुआ था विवाद

बैतूल। खेड़ी पुलिस चौकी अंतर्गत चुनालोमा के पोहा ढाना में एक बेटे ने शराब के लिए पैसे न देने पर अपने पिता की पत्थर से हमला कर हत्या कर दी। पुलिस ने आरोपी बेटे को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार, यह घटना शुक्रवार रात करीब 9 बजे हुई। आरोपी अनिल उइके (32) ने अपने पिता सत्तू उइके से शराब पीने के लिए पैसे मांगे थे। पिता द्वारा पैसे देने से इनकार करने पर दोनों के बीच विवाद शुरू हो गया। गुस्से में आकर अनिल ने पास पड़ा एक बड़ा पत्थर उठाकर पिता के सिर पर हमला कर दिया। गंभीर चोट लगने से सत्तू उइके की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी अनिल मौके से फरार हो गया था। शनिवार को गांव में सत्तू उइके का शव मिलने के बाद पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही खेड़ी चौकी और कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया। जांच के दौरान, संदेह के आधार पर बेटे अनिल उइके से पूछताछ की गई, जिसने अपना जुर्म कबूल कर लिया।

न्यूजीलैंड प्रतिनिधिमंडल बैतूल भ्रमण पर

नंदा वन धन विकास केंद्र हनी कलेक्शन सेंटर का करेगा अवलोकन

बैतूल। न्यूजीलैंड से आने वाला एक प्रतिनिधिमंडल 11 मई सोमवार को बैतूल जिले के भ्रमण पर रहेगा। भ्रमण के दौरान प्रतिनिधिमंडल द्वारा जिले में संचालित मधु संग्रहण एवं जनजातीय आजीविका गतिविधियों का अवलोकन किया जाएगा। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार प्रतिनिधिमंडल दोपहर लगभग दोपहर 1ः30 से 2 बजे तक बैतूल पहुंचेगा, जहां नंदा वन धन विकास केंद्र हनी कलेक्शन सेंटर का भ्रमण करेगा। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल को जनजातीय मधु संग्राहकों एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी जाएगी। भ्रमण के दौरान प्रतिनिधिमंडल शहद संग्रहण की प्रक्रिया, स्थानीय हनी वैल्यू चेन, संग्रहण, ग्रेडिंग एवं प्राथमिक भंडारण प्रक्रियाओं का अवलोकन करेगा। साथ ही क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं एवं हितग्राहियों के साथ संवाद कार्यक्रम भी आयोजित होगा। कार्यक्रम के पश्चात प्रतिनिधिमंडल बैतूल से भोपाल के लिए प्रस्थान करेगा।

उत्कृष्ट स्कूल के व्याख्याता संदीप परसाई का श्रद्धांजलि कार्यक्रम कल

बैतूल। उत्कृष्ट स्कूल के व्याख्याता और स्वर्गीय पंडित हरिनारायण परसाई के छोटे सुपुत्र संदीप परसाई का विगत 29 अप्रैल बुधवार को आकस्मिक निधन हो गया था। उनका श्रद्धांजलि कार्यक्रम (अन्नदान रसोई एवं गंगाजलि पूजन) कल 12 मई मंगलवार को दोपहर 12 बजे से मां कर्मा भवन काली चट्टान, माता मंदिर के पास कालापाठा बैतूल में संपन्न होगा। स्व. परसाई के पुत्र भव्य परसाई, भाई कृष्णचंद्र, श्रीगोविंद, सुशील, संजय परसाई ने शुभचिंतको, इष्ट मित्रों, परिचितों से कार्यक्रम में शामिल होकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया है।

वरिष्ठ अधिकारियों ने मकान सूचीकरण एवं मकान गणना कार्य का किया निरीक्षण

बैतूल। भारत की जनगणना 2027 के प्रथम चरण अंतर्गत संचालित मकान सूचीकरण एवं मकान गणना कार्य जिले में निरंतर गति एवं गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ रहा है। कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशन तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी वंदना जाट के मार्गदर्शन में सभी नगरीय एवं ग्रामीण चार्जों में फील्ड कार्य गंभीरता एवं उत्तरदायित्व के साथ संपादित किया जा रहा है। जिले के कुल 2802 हाउस लिस्टिंग ब्लॉकों में से लगभग 2100 एचएलबी में कार्य प्रगतिरत है, जबकि लगभग 700 एचएलबी का कार्य पूर्ण कर पोर्टल पर सफलतापूर्वक सिंक किया जा चुका है। जिले में अब तक लगभग 25 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है। अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी नरेन्द्र कुमार गौतम, जनगणना कार्य निदेशालय से नियुक्त जिला प्रभारी भरत गौर, मास्टर ट्रेनर विनोद अड़लक एवं तकनीकी टीम द्वारा विभिन्न नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचकर फील्ड कार्यों का सतत निरीक्षण किया जा रहा है। आज नगरीय चार्ज शाहपुर जिसमें 16 एचएलबी हैं, जिसमें से सुपरवाइजर सर्कल 02, कुल एचएलबी 5 का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कमियों का सुधार करवाते हुए समय सीमा में कार्यपूर्ण करने के निर्देश दिये गये।

मकान नंबरिंग एवं नजरी नक्शों का किया जा रहा परीक्षण – निरीक्षण के दौरान प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों द्वारा किए जा रहे मकान नंबरिंग, नजरी नक्शा निर्माण एवं एचएलओ एप में दर्ज प्रविष्टियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जा रहा है। अधिकारियों द्वारा स्थल स्थिति से मिलान कर जानकारी की शुद्धता सुनिश्चित की जा रही है। अधिकारियों द्वारा स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि कोई भी मकान अथवा परिवार सर्वेक्षण से छूटने न पाए। डेटा की गुणवत्ता एवं सटीकता बनाए रखने के लिए प्रत्येक प्रविष्टि सावधानीपूर्वक दर्ज करने के निर्देश दिए जा रहे हैं।

फील्ड स्तर पर तकनीकी सहयोग एवं शंका समाधान जारी – चार्ज स्तर पर गठित टीमों एवं फील्ड ट्रेनर्स द्वारा फील्ड में आने वाली समस्याओं का तत्काल समाधान किया जा रहा है। साथ ही प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों को एचएलओ एप संचालन एवं डेटा प्रविष्टि संबंधी आवश्यक तकनीकी मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है। जिला प्रशासन द्वारा नागरिकों से अपील की गई है कि वे प्रगणकों को सही एवं तथ्यात्मक जानकारी उपलब्ध कराकर जनगणना कार्य में सहयोग प्रदान करें, जिससे विकास योजनाओं के लिए विश्वसनीय एवं सटीक आंकड़े प्राप्त हो सकें।

जिला आयुष अधिकारी ने किया आयुष संस्थाओं का आकस्मिक निरीक्षण

बैतूल। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने शनिवार को बारवी और बघोली शासकीय आयुर्वेद चिकित्सालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान आयुष संस्था समय पर खुली पायी गयी। डॉ. योगेश चौकीकर ने चिकित्सालय की साफ-सफाई, औषधि स्टॉक एवं मरीजों को दी जा रही सुविधाओं का बारीकी से जायजा लिया। सभी औषधियों का स्टॉक से मिलान कर उचित स्वास्थ्य सेवायें देने हेतु निर्देश दिये। उन्होंने सभी कर्मचारियों को उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं देने और मरीजों की संतुष्टि सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश दिये कि आयुष पद्धति का लाभ समस्त आम जन तक पहुंचना चाहिए। इस हेतु समय समय पर आयुष चिकित्सा शिविर आयोजित करने हेतु कहा गया। यह निरीक्षण अस्पतालों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। निरीक्षण के दौरान संस्था के चिकित्सा अधिकारी एवं समस्त कर्मचारी का स्टाफ़ उपस्थित रहा।

पेंशन गारंटी और एरियर्स भुगतान की मांग पर विद्युत पेंशनरों ने बनाई आंदोलन की रणनीति

कैशलेस चिकित्सा योजना में आ रही समस्याओं के निराकरण पर हुई चर्चा

बैतूल। मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन बैतूल की मासिक बैठक लिंक रोड स्थित कैम्पेन हाउस परिसर में शेख इसाक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक का संचालन बीपी धामोडे ने किया। इस दौरान नए सदस्यों का स्वागत किया गया तथा मई माह में जन्मदिन वाले सदस्यों को शुभकामनाएं दी गईं। बैठक में संगठन सचिव प्रकाश मांडवे ने संगठनात्मक विषयों के साथ लेखा कार्यालय एवं स्थानीय समस्याओं के निराकरण पर विचार रखे। बैठक में अंशदायी कैशलेस चिकित्सा योजना को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। बताया गया कि मध्य क्षेत्र भोपाल द्वारा योजना प्रारंभ कर दी गई है, लेकिन कई सदस्यों को चिकित्सा कार्ड प्राप्त करने और कार्ड में नाम संबंधी विसंगतियों की समस्या आ रही है। संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर समस्याओं के निराकरण एवं आवश्यक संपर्क नंबरों की जानकारी भी दी गई। इसके बाद भी समस्या का समाधान नहीं होने पर एसोसिएशन पदाधिकारियों द्वारा कंपनी प्रबंधन से चर्चा करने की बात कही गई। बैठक में स्वास्थ्य मंत्रा एप डाउनलोड करने की प्रक्रिया, योजना में शामिल अस्पतालों एवं मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी भी दी गई। सचिव एवं प्रांतीय विधि सलाहकार एमएम अंसारी ने 28 अप्रैल को भोपाल में आयोजित संयुक्त मोर्चा की बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी दी। साथ ही मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेंशनर एसोसिएशन जबलपुर द्वारा वल्लभ भवन भोपाल में ऊर्जा सचिव विशेष गढ़वाले के साथ हुई चर्चा से अवगत कराया।

विधायक ट्राफी -

स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति फाइनल मुकाबला सोमवार को, रामगंज टाइगर फाइनल में

सोहागपुर । स्व मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 नाइट टेनिस बाल प्रीमियर लीग टेनिस क्रिकेट प्रतियोगिता करीबन 14 चलने वाली का फाइनल मुकाबला सोमवार रात 8 बजे होगा। आयोजक रामप्रसाद वार्ड पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि शनिवार को हुए क्रिकेट प्रतियोगिता में रामगंज टाइगर ने फाइनल मुकाबला में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है। फाइनल मुकाबला के समापन समारोह में क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह सहित कई जानी-मानी हस्तियां उपस्थित रहेंगी। शनिवार रात स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 नाइट टेनिस बाल प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता में दो मैच हुए । जिसमें पहला क्वालीफायर मैच 72 फाइटर्स एवं रामगंज टाइगर के बीच खेला गया। जिसमें 72 फाइटर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 85 रन बनाए। इसके जवाब में रामगंज टाइगर ने आठ ओवरों में ही निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करके 2 विकेट से जीत दर्ज कर फाइनल खेलने वाली पहली टीम बनी। इस रोमांचक मुकाबले में मेन ऑफ द मैच सौरभ पोलार्ड को चुना गया।

उपस्थित अतिथियों ने सौरभ पोलार्ड को पुरस्कार प्रदान किए। स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल

स्मृति विधायक ट्राफी 3 नाइट टेनिस बाल क्रिकेट प्रतियोगिता का दूसरा मैच शिवांश क्लब एवं विश्वकर्मा फर्नीचर एंड सी एन सी के मध्य खेला गया। जिसमें शिवांश क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 93 रन बनाए । इसके जवाब में विश्वकर्मा फर्नीचर एंड सी एन सी ने 9 ओवर में लक्ष्य हासिल करके सेमीफाइनल में जगह बना ली । इस प्रतियोगिता में मेन ऑफ द मैच का पुरस्कार सोहेल को अतिथियों ने प्रदान किया। इस स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 नाइट टेनिस बाल प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता के अवसर पर भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता अधिवक्ता गण, पत्रकार बन्धु, शिक्षक गण, गणमान्य नागरिकों के अलावा स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल उपस्थित थे। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि प्रतियोगिता का आंखों देखा हाल अंकित श्रोती, पवन रघुवंशी ,अरबाज सुनाया ।स्कोरिंग सिद्धार्थ मौर्य ,देव पाली ,सूरज चौरसिया गोल्डी ने की । प्रतियोगिता की अंपायरिंग प्रवेश चौहान ,शिवम दुबे ,परिणय मालवीय ने की ।आज रात प्रतियोगिता का दूसरा क्वालीफायर मुकाबला रात 8 बजे से 72 फाइटर्स एवं विश्वकर्मा फर्नीचर एंड सी एन सी के मध्य होगा। इस प्रतियोगिता का रोमांचक मुकाबला होगा दोनों टीम फाइनल में जगह बनाने के लिए भिड़ेगी। इस प्रतियोगिता में जीतने वाली टीम सोमवार 11 मई रात 8 बजे रामगंज टाइगर से फाइनल में खिताब के लिए भिड़ेगी। इस प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार 81हजार एवं उपविजेता टीम को 41 हजार रुपए एवं ट्राफी अतिथियों के द्वारा प्रदान की जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

पीएम विश्वकर्मा योजना का लाभ लेकर स्वयं की वर्कशॉप प्रारंभ की, मासिक आय 10 हजार हुई

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले की नटेरन तहसील के रहने वाले श्री भारत सिंह पुत्र छक्कूलाल ने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का लाभ लेकर अपनी मासिक आय 10 हजार रुपये कर ली है उन्होंने स्वयं की वर्कशॉप प्रारंभ कर इस उपलब्धि को हासिल किया है। पीएम विश्वकर्म योजना से लाभान्वित हितग्राही श्री भारत सिंह ने बताया कि उन्हें प्रधान मंत्री विश्वकर्मा योजना के बारे में अपने क्षेत्र के जनपद कार्यालय से जानकारी प्राप्त हुई, उन्होंने पीएम विश्वकर्मा योजना का प्रशिक्षण आईटीआई विदिशा से बास्केटमैकर जॉब रोल में प्राप्त किया, योजना के तहत उन्हें एक लाख रुपये की लोन राशि प्राप्त की जिसमें उन्होंने वर्धा ग्राम में स्वयं की दुकान प्रारंभ की है। इस योजना ने उनका जीवन बदल दिया है एवं आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति करने में सहायता प्रदान की है।

जनगणना-2027 मकान सूचीकरण में अच्छा कार्य करने वाले सुपरवाइजरों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर किया सम्मानित

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के मार्गदर्शन में जनगणना-2027 के अंतर्गत मकान सूचीकरण में रायसेन जिले के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सर्वप्रथम, उत्कृष्ट और शत-प्रतिशत कार्य को पूर्ण करने वाले 40 सुपरवाइजरों का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत सीईओ श्री कमल सोलंकी ने सभी उपस्थित सुपरवाइजरों को जनगणना में किए गए शत-प्रतिशत और उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की, साथ ही सुपरवाइजरो द्वारा अपना-अपना कार्यो का अनुभव भी सांझा किया गया। कार्यक्रम के अंत में जिला पंचायत सीईओ श्री सोलंकी द्वारा सुपरवाइजरों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

एसडीएम ने देर रात उपार्जन केंद्र पहुंचकर मुख्य मार्ग पर खड़े कृषि वाहनों को करवाया व्यवस्थित

नर्मदापुरम (निप्र)।कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के निर्देशन में एसडीएम सिवनी मालवा विजय राय द्वारा बीती रात क्षेत्र के विभिन्न उपार्जन केंद्रों/ वेयरहाउसों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर द्वारा जारी निर्देशानुसार, केंद्रों के बाहर सड़क पर खड़े वाहनों की लंबी लाइनों को व्यवस्थित कर केंद्र परिसर के भीतर खड़ा करवाया गया। जिससे मुख्य मार्गों पर वाहन खड़े होने के कारण कोई अप्रिय घटना घटित ना हो। आपातकालीन स्थिति में यदि कोई वाहन सड़क किनारे खड़ा होता है, तो वह दूर से ही दिखाई दे सके, इसके लिए वाहनों पर रेडियम की पट्टियाँ लगाना अनिवार्य किया गया है। मौके पर उपस्थित एसडीएम ने स्वयं ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर रेडियम की पट्टियाँ चिपकाई। साथ ही उन्होंने किसानों और चालकों को सुरक्षा के प्रति जागरूक भी किया। समिति प्रबंधकों और वेयरहाउस मालिकों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि किसी भी परिस्थिति में वाहन सड़क पर अस्त-व्यस्त न खड़े हों। इस हेतु आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उल्?लेखनीय है कि रात के समय सड़कों के किनारे खड़े ट्रैक्टर-ट्रॉली अंधेरे के कारण पीछे से आने वाले वाहनों को दिखाई नहीं देते, जिससे गंभीर दुर्घटनाएं हो सकती है। उक्त परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए रेडियम की पट्टियाँ वाहनों पर चस्पा की गई ताकि वाहन दूर से ही चमके, एवं आने जाने वाले वाहन सावधानी के साथ निकल सकें और दुर्घटनाओं से बचा जा सकेगा।

सहायक आयुक्त ने विकासखंड शिक्षा कार्यालय शाहपुर का किया औचक निरीक्षण

बैतूल (निप्र)। जनजातीय कार्य विभाग बैतूल के सहायक आयुक्त ने बुधवार को विकासखंड शिक्षा कार्यालय शाहपुर का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कार्यालय में संधारित रोकड़बही, सेवा अभिलेख एवं कर्मचारी उपस्थिति पंजी का बारीकी से अवलोकन किया गया। निरीक्षण में कुछ सेवा अभिलेखों में अवकाश लेखा अपूर्ण पाए जाने के साथ ही सेवापुस्तिका के प्रथम पृष्ठ, जिसमें जन्मतिथि अंकित होती है, पर आवश्यक रूप से सेलो टेप नहीं लगाए जाने की आपत्ति दर्ज की गई। इस पर अधिकारियों को आवश्यक सुधार करते हुए भविष्य में ऐसी लापरवाही दोहराए जाने से बचने के निर्देश दिए गए। इसके अलावा निलंबित कर्मचारियों की उपस्थिति को लेकर भी गंभीरता जताई गई। जिन कर्मचारियों का मुख्यालय निर्धारित किया गया है , उनके द्वारा प्रतिदिन कार्यालय में उपस्थिति दर्ज नहीं किए जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए उनकी उपस्थिति नियमित सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

रेत, गिट्टी और बोल्डर के अवैध परिवहन में संलिप्त 3 वाहनों को किया जप्त

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत बुधवार को खनिज विभाग द्वारा खनिज अमले के साथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। खनिज अमले द्वारा गौण खनिजों के अवैध परिवहन में संलिप्त वाहनों पर कार्यवाही करते हुए उन वाहनों को जप्त कर समीपस्थ पुलिस थानों की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है। खनिज प्रशासन उप संचालक एवं खनि निरीक्षक बैतूल द्वारा खनिज अमले के साथ मुलताई क्षेत्रांतर्गत ग्राम परमंडल के पास से खनिज गिट्टी के अवैध परिवहन में संलिप्त 01 वाहन डम्पर क्रमांक एमपी 48 एच 0625 को जप्त कर पुलिस थाना सांईखेड़ा की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है। वहीं, बैतूल क्षेत्रांतर्गत बैतूल बाजार के पास से खनिज बोल्डर के अवैध परिवहन में संलिप्त 01 वाहन डम्पर क्रमांक एमएच 12 डब्ल्यूजे 9371 को जप्त कर पुलिस थाना बैतूल बाजार की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है। इसके अलावा चक्कर रोड कमानी गेट के पास से खनिज रेत के अवैध परिवहन में संलिप्त 01 वाहन डम्पर क्रमांक एमपी 28 एच 2414 को जप्त कर पुलिस थाना गंज बैतूल की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है। उपरोक्त अवैध परिवहनकर्ताओं के विरूद्ध मध्यप्रदेश खनिज नियम 2022 के प्रावधानों के तहत कार्यवाही कर प्रकरणों को न्यायालय अपर कलेक्टर बैतूल में प्रस्तुत किया जा रहा है।

वन स्टॉप सेंटर की संवेदनशील पहल से 85 वर्षीय महिला अपने परिवार से मिलीं

विदिशा (निप्र)। मानवीय संवेदनाओं, त्वरित सहायता और प्रशासनिक समन्वय का एक प्रेरणादायक उदाहरण विदिशा जिले में संचालित वन स्टॉप सेंटर द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जिला कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन, जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा के मार्गदर्शन एवं वन स्टॉप सेंटर की प्रशासक श्रीमती कृतिका व्यास के अथक प्रयासों से एक 85 वर्षीय वृद्ध महिला को सुरक्षित रूप से उनके परिवार तक पहुंचाया गया। यह पहल न केवल प्रशासन की संवेदनशील कार्यप्रणाली को दर्शाती है, बल्कि मानवता और सेवा भावना की उत्कृष्ट मिसाल भी बनी है। जानकारी के अनुसार वृद्ध महिला, जिनका परिवर्तित नाम इंदुबाई रखा गया, गलती से गलत ट्रेन में बैठ गई थीं, जिसके कारण वे अपने घर से सैकड़ों किलोमीटर दूर विदिशा पहुंच गईं।

अपरिचित स्थान पर पहुंचने के बाद महिला असहाय एवं भ्रमित अवस्था में भटक रही थीं। दिनांक 22 अप्रैल 2026 को मेडिकल कॉलेज परिसर में महिला अस्वस्थ हालत में मिलीं। इस संबंध में पत्रकार श्री कोमल प्रसाद द्वारा सूचना दिए जाने पर वन स्टॉप सेंटर की टीम तत्काल सक्रिय हुई। वन स्टॉप सेंटर के कर्मचारियों ने त्वरित कार्रवाई करते हुए महिला का रेस्क्यू कर उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया। उस समय महिला मानसिक एवं शारीरिक रूप से अत्यंत कमजोर थीं तथा अपनी पहचान अथवा निवास संबंधी जानकारी स्पष्ट रूप से देने की स्थिति में नहीं थीं। ऐसी परिस्थिति में वन स्टॉप सेंटर की टीम ने संवेदनशीलता एवं धैर्य के साथ

उनकी देखभाल प्रारंभ की। अस्पताल में उपचार के दौरान सेंटर स्टाफ एवं आंगनवाड़ी सहायिकाओं द्वारा नियमित रूप से महिला की सेवा की गई। उन्हें समय पर भोजन, दवाइयां एवं आवश्यक देखभाल उपलब्ध कराई गई। निरंतर देखभाल एवं उपचार के कारण धीरे-धीरे महिला के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। वन स्टॉप सेंटर की परामर्शदाता श्रीमती रेखा राठौर ने महिला से लगातार संवाद स्थापित किया तथा विश्वासपूर्ण वातावरण में उनसे बातचीत कर उनके परिवार एवं निवास संबंधी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। कई दिनों के प्रयासों के बाद महिला ने अपने गांव एवं क्षेत्र के बारे में जानकारी देना प्रारंभ किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि वे बिहार राज्य के मधुबनी क्षेत्र के आसपास की निवासी हैं।

महिला के स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार होने के बाद वन स्टॉप सेंटर द्वारा उनके सुरक्षित पुनर्वास की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। इस कार्य में जीआरपी विदिशा का भी महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। विभागों के समन्वित प्रयासों से महिला को सुरक्षित रूप से मधुबनी, बिहार भेजा गया। वहां मधुबनी वन स्टॉप सेंटर के सहयोग से उन्हें उनके गांव सलोनी में उनके परिवार तक पहुंचाया गया। कई दिनों से लापता वृद्ध महिला को सुरक्षित अपने बीच पाकर परिवार के सदस्यों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। परिवारजनों ने प्रशासन एवं वन स्टॉप सेंटर की टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समय पर मिली सहायता ने उनकी उम्मीदों को फिर से जीवित कर दिया।

यह पूरा घटनाक्रम दर्शाता है कि संवेदनशील प्रशासन, मानवीय व्यवहार एवं विभागों के बीच बेहतर समन्वय से जरूरतमंद लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। वन स्टॉप सेंटर की यह पहल समाज के लिए प्रेरणादायक है तथा यह संदेश देती है कि कठिन परिस्थितियों में भी मानवता और सेवा की भावना सबसे बड़ी ताकत होती है।

प्राकृतिक खेती अपनाकर किसान राजेश यादव ने बदली खेती की तस्वीर

बैतूल (निप्र)। आमला क्षेत्र के भ्रमण के दौरान कलेक्टर डॉ.सौरभ संजय सोनवणे जब ग्राम पंचायत बोरीखुर्द पहुंचे, तो यहां एक किसान की मेहनत, नवाचार और प्राकृतिक खेती के प्रति समर्पण ने उनका ध्यान आकर्षित किया। ग्राम बोरीखुर्द के कृषक श्री राजेश यादव आज उन किसानों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं, जो खेती में बढ़ती लागत और घटते लाभ से परेशान हैं। करीब 10 वर्ष पूर्व तक श्री राजेश यादव भी पारंपरिक रूप से रासायनिक खाद और दवाइयों के सहारे खेती करते थे। बढ़ती लागत और मिट्टी की घटती उर्वरता ने उन्हें चिंतित कर दिया था। इसी दौरान आत्मा परियोजना के तहत बीटीएम श्री नितिन जायसवाल एवं एटीएम श्री प्रशांत देशमुख ने उन्हें प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में सीमित स्तर पर प्रयोग करने वाले राजेश यादव ने धीरे-धीरे पूरी तरह प्राकृतिक खेती को अपना लिया। आज वे जीवामृत , बीजामृत, घनजीवामृत, वेस्ट डीकम्पोजर, पांच पत्ती काढ़ा एवं दस पत्ती काढ़ा जैसे जैविक संसाधनों का उपयोग कर लगभग 10 एकड़ भूमि में खेती कर रहे हैं। उनके खेत में गन्ना, गेहूं, चना, अरहर, धान एवं मक्का जैसी फसलें उगाई जाती हैं। विशेष बात यह है कि वे गन्ने से गुड़ निर्माण का कार्य भी करते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। प्राकृतिक खेती अपनाने से खेती की लागत में उल्लेखनीय कमी आई है, वहीं उनके उत्पादों को बाजार में बेहतर मूल्य भी मिल रहा है। राजेश यादव आधुनिक तकनीकों का भी उपयोग कर रहे हैं। खेत में ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली के साथ सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई व्यवस्था स्थापित की गई है, जिससे पानी और बिजली दोनों की बचत हो रही है।

प्रोजेक्ट सुरक्षा के तहत सोहागपुर में ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर लगाई गई रेडियम पट्टियाँ

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के निर्देशानुसार जिलेभर में संचालित 'प्रोजेक्ट सुरक्षा' के अंतर्गत सड़क सुरक्षा से संबंधित गतिविधियों को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। अभियान का उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना तथा हादसों में होने वाली मृत्यु दर पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करना है। इसी क्रम में अनुविभाग सोहागपुर में एसडीएम सुश्री प्रियंका भलावी एवं एसडीओपी श्री संजू चौहान द्वारा संयुक्त रूप से ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर रेडियम पट्टियाँ लगाकर रात्रि के समय होने वाले सड़क हादसों की रोकथाम की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई। अक्सर यह देखा जाता है कि रात के समय बिना किसी रिफ्लेक्टर अथवा संकेत के चलने वाले ट्रैक्टर-ट्रॉली अन्य वाहनों के लिए खतरा बन जाते हैं, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए अधिकारियों ने स्वयं मौके पर पहुंचकर ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के पीछे रेडियम स्ट्रिप लगवाई, ताकि वे दूर से ही स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकें। उपार्जन केंद्र पर उपस्थित एवं कतार में लगे ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर भी रेडियम पट्टियाँ लगाई गईं, जिससे रात्रिकालीन आवागमन के दौरान उनकी दृश्यता बढ़ सके और दुर्घटनाओं की संभावना कम हो। इस अवसर पर वाहन चालकों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करते हुए आवश्यक सावधानियाँ बरतने की अपील भी की गई। प्रशासन द्वारा कहा गया कि सड़क सुरक्षा सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है और छोटे-छोटे प्रयास भी बड़ी दुर्घटनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

जनसहभागिता से जल संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में बैतूल को मॉडल जिला बनाएं: कलेक्टर डॉ सौरभ संजय सोनवणे

बैतूल (निप्र)। पंख कार्यक्रम अंतर्गत दृष्टि योजना के तहत कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे की अध्यक्षता में जिले के विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने सभी स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों से परिचय प्राप्त करते हुए कहा कि जिले में पर्यावरण संरक्षण, वन ऊर्जा, नशा मुक्ति, प्राकृतिक कृषि सहित विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में संस्थाओं द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शासकीय योजनाओं के प्रभावी प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में भी इन संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने जिले में जल संरक्षण के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि अभी भी जिले

में जल संरक्षण एवं संवर्धन की व्यापक संभावनाएं हैं। उन्होंने पूर्व में किए गए जल संरक्षण कार्यों का डॉक्यूमेंटेशन करने पर जोर देते हुए कहा कि इससे आगामी परियोजनाओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन मिलेगा।

उन्होंने सभी संस्थाओं से बैतूल जिले को जल संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में मॉडल जिला बनाने की दिशा में कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बैतूल जिले के नागरिक सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति सजग एवं सक्रिय हैं। आगामी जल संरक्षण, कृषि एवं विकास परियोजनाओं में अपने सुझाव एवं सहयोग देकर जिले के समग्र विकास में सक्रिय सहभागिता निभाएं।

कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्राम सायगोहन में नमन सेवा संस्था द्वारा प्राकृतिक खेती की दिशा में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए अन्य लोगों से भी वहां जाकर कार्यों का अवलोकन करने का आग्रह किया। उन्होंने जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत नवांकुर संस्थाओं एवं प्रस्फुटन समितियों से कहा कि नदी पुनर्जीवन के महत्व को देखते हुए रिज टू वैली तकनीक के आधार पर कार्य करें। साथ ही जन अभियान परिषद को नदी पुनर्जीवन के लिए कार्ययोजना तैयार करने तथा स्वैच्छिक संगठनों के सुझाव एवं सहयोग लेने के निर्देश दिए। उन्होंने आगामी मानसून से पूर्व ऐसी कम से कम एक पहाड़ी का चिन्हांकन करने के निर्देश दिए, जहां हरियाली नहीं है और जहां जनसहभागिता से बड़े स्तर पर पौधारोपण किया जा सके। बैठक में माचना नदी के अविरल प्रवाह को बनाए रखने के संबंध में भी चर्चा की गई तथा इस दिशा में प्रशासन के साथ मिलकर कार्य करने का आग्रह किया गया।

जिले में सड़क सुरक्षा को नई दिशा देने के लिए प्रारंभ हुआ नवाचार

जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में कलेक्टर ने किया जिला स्तरीय 'प्रोजेक्ट सुरक्षा' अभियान का शुभारंभ

कृषि उपज मंडी इटारसी में जनप्रतिनिधियों सहित कलेक्टर ने ट्रैक्टर ट्रॉली पर लगाए रेडियम टेप

नर्मदापुरम (निप्र)। जिले में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने एवं जन सुरक्षा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कृषि उपज मंडी इटारसी परिसर से जिला स्तरीय 'प्रोजेक्ट सुरक्षा' अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर जनपद पंचायत नर्मदापुरम अध्यक्ष श्री भूपेंद्र चौकसे, नगर पालिका इटारसी अध्यक्ष श्री पंकज चौरे, मध्यप्रदेश तैराकी संघ के अध्यक्ष श्री पीयूष शर्मा एवं कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा उपस्थित रहे। अभियान के शुभारंभ से पूर्व कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने मंडी के सभा कक्ष में आयोजित कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों - कर्मचारियों एवं पत्रकार बंधुओं को संबोधित करते हुए अभियान के उद्देश्य, आवश्यकता एवं संभावित लाभों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 'प्रोजेक्ट सुरक्षा' का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली सड़क दुर्घटनाओं एवं उनसे होने वाली मृत्यु दर में कमी लाना है। कलेक्टर श्री मिश्रा ने बताया कि इस अभियान के अंतर्गत ट्रैक्टर एवं ट्रॉलियों पर रिफ्लेक्टर (रेडियम) पट्टियां लगाई जाएंगी, जिससे रात्रि के समय उनकी दृश्यता बढ़े और पीछे से होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके। इसके साथ ही जिले में बड़े स्तर पर सीपीआर प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किए जाएंगे, ताकि आपात स्थिति में लोगों को त्वरित प्राथमिक सहायता मिल सके। उन्होंने हेलमेट के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दुर्घटनाओं के समय हेलमेट जीवन रक्षक सिद्ध होता है और इसके उपयोग से मृत्यु की संभावना को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से अभियान के तहत 'हेलमेट से सुरक्षा' के संदेश के साथ आमजन को जागरूक किया जाएगा। साथ ही चार पहिया वाहन चालकों को सीट बेल्ट के उपयोग के प्रति प्रेरित किया जाएगा तथा सभी नागरिकों को यातायात नियमों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। अभियान के शुभारंभ अवसर पर कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा सहित उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने मंडी परिसर में आए विभिन्न ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर रेडियम टेप लगाकर अभियान की औपचारिक शुरुआत की। जिला प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए इस अभियान को सफल बनाने में सक्रिय सहभागिता निभाएं। इस दौरान एसडीएम इटारसी श्री निलेश शर्मा, डिप्टी कलेक्टर एवं प्रभारी जिला आपूर्ति अधिकारी श्रीमती नीता कोरी, डीएसपी ट्रैफिक श्री संतोष मिश्रा, उपसंचालक कृषि श्री रविकांत सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं प्रशासनिक अधिकारी गण उपस्थित रहे।

शिक्षा व्यवस्था में लापरवाही बर्दाश्त नहीं, गुणवत्ता पर दें विशेष ध्यान : कलेक्टर डॉ. सोनवणे

बैतूल (निप्र)।कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार में शिक्षा विभाग की विस्तृत समीक्षा बैठक लेकर अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए जमीनी स्तर पर प्रभावी कार्य किया जाए। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने सख्त निर्देश देते हुए कहा कि जिले के सभी विद्यालय निर्धारित समय पर खुलना सुनिश्चित किए जाएं तथा शिक्षक स्कूल समय से कम से कम आधा घंटा पूर्व उपस्थित रहें। उन्होंने निर्देशित किया कि बिना अनुमति के प्रिंसिपल, कोई भी शिक्षक अथवा कर्मचारी अवकाश पर नहीं रहेगा। अनधिकृत अनुपस्थिति पाए जाने पर संबंधित के विरुद्ध निलंबन सहित कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग के अधिकारी नियमित रूप से स्कूलों का निरीक्षण करें और यह सुनिश्चित करें कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। जिन विद्यालयों में परीक्षा परिणाम कमजोर रहे हैं, वहां विशेष शैक्षणिक गतिविधियां संचालित कर सुधार लाया जाए। उन्होंने विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति बढ़ाने, ड्रॉप आउट रोकने तथा बच्चों के सीखने के स्तर पर लगातार निगरानी रखने के निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने जिले के शासकीय विद्यालयों की शैक्षणिक स्थिति, विद्यार्थियों की उपस्थिति, गणवेश वितरण, बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम, शिक्षकों की उपलब्धता, आधारभूत सुविधाएं तथा संचालित योजनाओं की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की।

उपार्जन केंद्रों पर किसानों को न हो किसी भी प्रकार की समस्या

कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने केसला तहसील का सघन निरीक्षण कर उपार्जन केंद्रों, जनपद एवं विद्यालय व्यवस्थाओं पर दिए व्यापक निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने अनुविभाग इटारसी अंतर्गत केसला तहसील का सघन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने गेहूं उपार्जन केंद्रों, जनपद पंचायत कार्यालय एवं सांदीपनि विद्यालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने उपार्जन केंद्रों पर चल रही खरीदी व्यवस्था, किसानों को उपलब्ध सुविधाओं तथा समुचित प्रबंधन का अवलोकन किया। साथ ही जनपद पंचायत में संचालित कार्यों की समीक्षा करते हुए आवश्यक निर्देश दिए। सांदीपनि विद्यालय के निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने शैक्षणिक व्यवस्थाओं, विद्यालय के निर्माण एवं परिसर का भ्रमण कर अन्य तकनीकी पक्षों का भी जायजा लिया और

संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। इस अवसर पर एसडीएम श्री निलेश शर्मा, जनपद पंचायत सीईओ केसला श्रीमती सुमन खातरकर सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

उपार्जन केंद्रों पर हो किसानों के लिए समुचित व्यवस्था, एफएक्यू मानक के अनुरूप हो खरीदी : कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने केसला अंतर्गत अग्रसेन एवं मीना वेयरहाउस में स्थापित गेहूं उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं एवं खरीदी प्रक्रिया का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने केंद्रों पर उपलब्ध सुविधाओं, गेहूं की गुणवत्ता तथा किसानों को दी जा रही सेवाओं का विस्तार से अवलोकन किया। कलेक्टर श्री मिश्रा ने प्रत्येक केंद्र पर पहुंचकर गेहूं के सैंपल की जांच की और केंद्र प्रभारियों को निर्देश दिए कि एफएक्यू (युक्त) गुणवत्ता से किसी भी प्रकार का समझौता न किया जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि केवल शासन द्वारा निर्धारित उपार्जन नीति के अनुरूप ही गेहूं की खरीदी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने निर्देशित किया कि उपार्जन केंद्र पर आने वाले स्कंध की सर्वे के माध्यम से जांच अनिवार्य रूप से की जाए तथा यदि उसमें मिट्टी या अन्य फॉरेन मटेरियल पाया जाए तो उसे आवश्यकतानुसार साफ कराया जाए। कलेक्टर ने यह भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि जिन किसानों के स्लॉट जिस दिन बुक होते हैं, उनके स्कंध की तुलाई उसी दिन की जाए और किसी भी किसान का स्कंध 24 घंटे से अधिक बिना तुलाई के लंबित न रहे। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने केंद्र पर बनाए गए मेडिकल किट काउंटर का भी अवलोकन किया और निर्देश दिए कि भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए किसानों एवं उपार्जन कार्य में लगे हम्मालों के लिए पेयजल एवं शीतल पेय की नियमित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। केंद्र पर पहुंचे ट्रैक्टर-ट्रॉलियों का निरीक्षण करते हुए कलेक्टर ने किसानों को ट्रैक्टर पर नंबर प्लेट लगाने एवं ट्रॉली पर रेडियम टेप लगाने की समझाइश दी।

भारत सरकार | सोमनाथ

सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।
लभते फलं मनोवाञ्छितं मृतः स्वर्गं समाश्रयेत्॥

सोमनाथ

विरासत के 75 साल

सोमनाथ भारत की अजेय सभ्यता का प्रतीक है। 1000 वर्षों के विनाशकारी प्रहारों के बाद भी, सोमनाथ आज हमारे आत्म-सम्मान और साहस की मिसाल बनकर खड़ा है।
75 वर्ष पहले लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प से आधुनिक सोमनाथ का मार्ग प्रशस्त हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, आज यह पावन भूमि भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का उद्घोष कर रही है।

इस स्वर्णिम अवसर के साक्षी बनें

मुख्य गतिविधियां

कलश यात्रा | भजन संध्या | ॐकार मंत्र का जाप
सोमनाथ पुस्तिका में मंत्र लेखन | सोमनाथ से जुड़ी कथाओं का वाचन

श्री सोमनाथ मंदिर परिसर, प्रभास पाटन | 8 से 11 मई, 2026

"सोमनाथ आशा का वह गीत है जो हमें सिखाता है कि सृजन की शक्ति विनाश से कहीं अधिक प्रबल होती है।"
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी (अध्यक्ष, श्री सोमनाथ ट्रस्ट)

सोमनाथ की दिव्यता एवं भव्यता में दें योगदान और बनें गौरवशाली इतिहास का हिस्सा।
स्कैन करें।

D-11020/26

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी